ऋषि प्रसाद
वर्ष : ५
जनवरी-फरवरी १९९५
अंक : २८

वर्ष : ५
अंक : २८
जनवरी-फरवरी १९९५

सम्पादक : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रू. २५
आजीवन : रू. २५०/-
परदेश में वार्षिक : US $ 15 (डॉलर)
आजीवन : US $ 150 (डॉलर)

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

**परदेश में शुल्क भरने का पता :**
International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : विनय प्रिन्टींग प्रेस
प्रकाशक और मुद्रक : के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.
भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।



# अनुक्रम



**❀ 'ऋषि प्रसाद' ❀**

**हर दूसरे महीने की ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।**

**कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।**

# साईं टेऊँराम

वृक्ष कबहुँ नहीं फल भखै, नदी न पीवे नीर ।
परमारथ के कारने, साधु धरा शरीर ॥

जैसे वृक्ष अपने फलों को स्वयं कभी नहीं खाता, सरिता अपने नीर का स्वयं पान कभी नहीं करती वैसे ही संतों का जीवन भी अपने लिए नहीं होता ।

हालांकि संतों की यश-कीर्ति से जलनेवाले लोग उनकी यश-कीर्ति को धूमिल करने के बहुतेरे प्रयास करते हैं । किन्तु इन सबकी परवाह न करते हुए वे संतजन अपने जीवन को परहित में ही व्यतीत कर देते हैं । उनका जीवन तो बस, मानवमात्र को दुःखों से छुटकारा दिलवाकर उनके भीतर शांति एवं आनंद भरने में ही खर्च होता है ।

सिंध प्रांत में ऐसे ही एक महान् संत हो गये - साईं टेऊँराम । उनके सान्निध्य को पाकर लोग बहुत खुशहाल रहते थे । निगाहमात्र से ही लोगों में शांति एवं आनंद का संचार कर देने की शक्ति उनमें थी । उनके सत्संग में मात्र वृद्ध स्त्री-पुरुष ही नहीं, कई युवान-युवतियाँ भी आते थे । उनकी बढ़ती प्रसिद्धि एवं उनके प्रति लोगों के प्रेम को देखकर कई तथा-कथित समाजसुधारकों को तकलीफ होने लगी ।

समाजसुधारक भी दो प्रकार के होते हैं : एक तो सज्जन लोग होते हैं और दूसरे वे लोग होते हैं जो दूसरों के यश को देखकर जलते हैं । उनको होता है कि कैसे भी करके अपनी प्रसिद्धि हो जाये । ऐसे ही कुछ मलिन मुरादवालों ने साईं टेऊँराम का कुप्रचार शुरू कर दिया ।

कुप्रचार ने इतना जोर पकड़ा, इतना जोर पकड़ा कि कुछ भोलेभाले सज्जन लोगों ने साईं टेऊँराम के पास जाना बंद कर दिया । उस वक्त के सज्जनों की यह बड़ी भारी गलती रही । उन्होंने सोचा कि 'अपना क्या ? जो करेगा सो भरेगा ।'

अरे ! कुप्रचार करनेवाले क्यों कुप्रचार करते ही रहें ? वे बिचारे करें और फिर भरें उससे पहले ही तुम उन्हें आँखें दिखा दो ताकि वे दुष्कर्म करें भी नहीं और भरें भी नहीं । समाज की बरबादी न हो, समाज गुमराह न हो ।

> संत तो सहन कर भी लेते हैं किन्तु प्रकृति से उनका विरोध सहा नहीं जाता । जिन्होंने साईं टेऊँराम को अपमानित करने की कोशिश की, उनमें से किसीका बेटा मर गया तो किसीको लकवा हो गया, कोई पागल हो गया तो कोई पुत्रसुख से वंचित् हो गया और न जाने कितने अशान्ति की आग में जलते रहे ।

खैर.... साईं टेऊँराम की निंदा एवं कुप्रचार ने आखिरकार इतना जोर पकड़ा कि नगर-पालिका में एक प्रस्ताव पास किया गया कि साईं टेऊँराम के आश्रम में जो लड़के-लड़कियाँ जायेंगे उनके माता-पिता को पाँच रूपये जुर्माना भरना पड़ेगा । उस वक्त पाँच रूपये की कीमत बहुत थी । ७८ रूपया तौला सोने की कीमत थी तब की यह बात है ।

सौ रूपये दान करना तो अच्छी बात है लेकिन दंड भरना, यह तो बड़ी लज्जा की बात है । कुछ कमजोर मन के लोग थे उन्होंने तो अपने बेटे-बेटियों को साईं टेऊँराम के आश्रम में जाने से रोका । कुछ

लड़के-लड़कियाँ तो रुक गये। लेकिन जिनको महापुरुष की कृपा का स्वाद ठीक से समझ में आ गया था वे नहीं रुके। उनकी अंतरात्मा तो मानो कहती हो कि :

हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं।
हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं॥

बीड़ी-सिगरेटवाला बीड़ी-सिगरेट नहीं छोड़ता, शराबी शराब नहीं छोड़ता, जुआरी जुआ खेलना नहीं छोड़ता, जेबकतरा जेब काटने का मलिन धंधा नहीं छोड़ता, तो वे समझदार, सत्संगी युवक-युवतियाँ गुरु के द्वार पर जाना कैसे छोड़ देते ? पास करनेवालों ने तो पाँच रूपये का जुर्माना पास कर दिया किन्तु सच्चे भक्तों ने साईं टेऊँराम के आश्रम में जाना नहीं छोड़ा।

हमारी जिनके प्रति श्रद्धा होती है, उनके लिए हमारे चित्त में सुख की भावना होती है। चाहे फिर रामभक्त शबरी हो या कृष्णभक्त मीरा। उनके हृदय में अपने आराध्य के लिए सुख देने की ही भावना थी। साईं टेऊँराम के शिष्य भी अपने गुरु की प्रसन्नता के लिए प्रयत्नशील रहते थे। अपने गुरु के प्रति अपने अहोभाव को प्रदर्शित करने के लिए अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार पत्र-पुष्पादि अर्पित करते थे। इसे देखकर दुष्टजनों के हृदय में बड़ी ईर्ष्या उत्पन्न होती थी। अतः उन्होंने कुप्रचार करने के साथ-साथ पाँच रूपये दंड का प्रस्ताव भी पास करवा लिया। कुछ ढीले-ढाले लोग नहीं आते थे, बाकी के साईं टेऊँराम के प्यारों ने तो आश्रम जाना जारी ही रखा। ईश्वर के पथ के पथिक इसी प्रकार वीर होते हैं। उनके जीवन में चाहे हजार विघ्न-बाधाएँ आ जायें किन्तु वे अपने लक्ष्य से च्युत नहीं होते। अनेक अफवाहें एवं निंदाजनक बातें सुनकर भी उनका हृदय गुरुभक्ति से विचलित नहीं होता क्योंकि वे गुरुकृपा के महत्त्व को ठीक से समझते हैं, गुरु के महत्त्व को जानते हैं।

अपने सद्गुरु श्री तोतापुरी महाराज में श्री रामकृष्ण परमहंस की अडिग श्रद्धा थी। एक बार किसीने आकर उनसे कहा : "तोतापुरी महाराज फलानी महिला के घर बैठकर खा रहे हैं। उन्हें आपने गुरु बनाया ?"

रामकृष्ण : "अरे ! बकवास मत कर। मेरे गुरुदेव के प्रति एक भी अपशब्द कहा तो ठीक न होगा।"

"किन्तु हम तो आपका भला चाहते हैं। आप तो माँ काली के साथ बात करते थे... इतने महान् होकर भी तोतापुरी को गुरु माना ! थोड़ा तो विचार करें ! वे तो ऐसे ही हैं।"

रामकृष्ण बोल पड़े : "मेरे गुरु कलाल खाने जायें तो भी मेरे गुरु मेरे लिए तो साक्षात् नंदराय ही हैं।"

यह है श्रद्धा। ऐसे लोग तर जाते हैं। बाकी के लोग आधे में ही मर जाते हैं।

...तो वे साईं टेऊँराम के प्यारे कैसे भी करके पहुँच जाते थे अपने गुरु के द्वार पर। माता-पिता को कहीं बाहर जाना होता तब लड़का-लड़की कहीं भागकर आश्रम न चले जायें यह सोचकर माता-पिता अपने बेटों को खटिया के पाये से बाँध देते और उन्हें बरामदे में रखकर बाहर से ताला लगाकर चले जाते। फिर सत्संग के प्रेमी लड़के क्या करते... खटिया को हिला-हिलाकर तोड़ देते एवं जिस पाये से उनका हाथ बँधा होता उस बँधे पाये के साथ ही साईं टेऊँराम के आश्रम पहुँच जाते और साईं टेऊँराम से खुलवा लेते। साईं टेऊँराम एवं अन्य साधक उनके बंधनों को खोल देते।

नगर में मरनेवाले पशुओं को लाकर साईं टेऊँराम के आश्रम के आसपास डाल देते। नगरपालिका के लोग मरे हुए ढोरों को वहाँ फेंक जाते। कितना अत्याचार !

जब लोगों ने देखा कि ये लोग तो खटिया के पाये समेत आश्रम पहुँच जाते हैं । अब क्या करें ?

उन दुर्बुद्धियों ने फिर एक प्रस्ताव पास कर लिया कि नगर में मरनेवाले पशुओं को लाकर साईं टेऊँराम के आश्रम के आसपास डाल दिया जाये । नगरपालिका के लोग मरे हुए ढोरों को वहाँ फेंक जाते । कितना अत्याचार !

किन्तु सहनशीलता के मूर्तिमंत रूप साईं टेऊँराम गड्ढे खोदकर नमक डालकर उन पशुओं को गाड़ देते । इसमें उनके शिष्य उन्हें सहाय करते ।

साईं टेऊँराम अपने आश्रम में ही अनाज उगाते थे । जब कुप्रचारकों ने देखा कि हमारा यह दाँव भी विफल जा रहा है तो उन्होंने एक नया फरमान जारी करवा दिया कि कोई भी दुकानदार साईं टेऊँराम के आश्रम की कोई भी वस्तु न खरीदे अन्यथा उस पर जुर्माना किया जायेगा ।

जब इतने से भी साईं टेऊँराम की समता, सहनशीलता में कोई फर्क नहीं आया एवं उनके साधकों की श्रद्धा यथावत् देखी तो उन नराधमों ने, आश्रम जिस कुँए के जल का उपयोग करता था उसमें केरोसीन (मिट्टी का तेल) डाल दिया । क्या नीचता की पराकाष्ठा है ! कितना घोर अत्याचार !

उन नराधमों ने, आश्रम जिस कुँए के जल का उपयोग करता था उसमें केरोसीन (मीट्टी का तेल) डाल दिया । क्या नीचता की पराकाष्ठा है ! कितना घोर अत्याचार !

लेकिन साईं टेऊंराम भी पक्के थे । संत-महापुरुष कच्ची मिट्टी के थोड़े-ही होते हैं ? भगवान की छाती पर खेलने की उनकी ताकत होती है । कई बार भगवान अपने प्रण को त्यागकर भी भक्तों की, संतों की बात रख लेते हैं, जैसे, भीष्म पितामह के संकल्प को पूरा करने के लिए भगवान ने अपने हथियार न उठाने के प्रण को छोड़ दिया था ।

साईं टेऊँराम के कुप्रचार से एक ओर जहाँ कमजोर मनवालों की श्रद्धा डगमगाती वहीं उनके प्यारों का प्रेम उनके प्रति दिन-ब-दिन बढ़ता जाता ।

साईं टेऊँराम अपने आश्रम में एक चबूतरे पर बैठकर सत्संग करते थे । उनके पास अन्य साधु-संत भी आते थे अतः वह चबूतरा छोटा पड़ता था । यह सोचकर उनके भक्तों ने उस चबूतरे को बड़ा बनवा दिया ।

बड़े चबूतरे को देखकर उनके विरोधी ईर्ष्या से जल उठे एवं वहाँ के तहसीलदार को बुला लाये । उसने आकर कहा कि यह चबूतरा अनधिकृत रूप से बनाया गया है जिसके कारण सड़क छोटी हो गयी है एवं लोगों को आने-जाने में परेशानी होती है । अतः इस चबूतरे को तोड़ देना चाहिए । यह कहकर उसने साईं टेऊँराम के विरुद्ध मामला दर्ज कर दिया एवं उन्हें अदालत में उपस्थित होने को कहा । किन्तु निश्चित समय पर साईं टेऊँराम अदालत में उपस्थित न हुए । दूसरे दिन जब वे स्नान करके तालाब से लौटे तो देखा कि चबूतरा टूटा हुआ है ।

संत तो सहन कर भी लेते हैं किन्तु प्रकृति से उनका विरोध सहा नहीं जाता । कुछ समय के पश्चात् उस तहसीलदार का स्थानांतरण दूसरी जगह हो गया । उसकी जगह जो दूसरा तहसीलदार आया वह बड़ा श्रद्धालु और भक्त था । अतः उसने पुनः वह चबूतरा बनवा दिया ।

जिन्होंने साईं टेऊँराम को अपमानित करने की कोशिश की, लज्जित और बदनाम करने की कोशिश की, उनकी तो कोई दाल नहीं गली । जिन्होंने साईं टेऊँराम को निन्दित करने का प्रयास किया, उनका कुप्रचार करके उनकी कीर्ति को कलंकित करने का प्रयास किया उनमें से किसीका बेटा मर गया तो किसीको लकवा हो गया, कोई पागल हो गया तो कोई पुत्रसुख से वंचित् हो गया और न जाने कितने अशान्ति की आग में जलते रहे । वे आज न जाने किस नरक में होंगे ? लेकिन साईं टेऊँराम के पावन यश की सौरभ आज भी चतुर्दिक प्रसारित होकर अनेक दिलों को पावन कर रही है । ❀

# संत-वचन का अद्भुत प्रभाव

आज से करीब अट्ठाईस-तीस साल पहले की बात है । शाहगंज, आगरा की श्रीकृष्ण गौशाला में मेरे पूज्य सद्गुरुदेव संत श्री लीलाशाहजी महाराज विराजमान थे ।

एक दिन एक वृद्ध आदमी रोता-रोता गुरुदेव के पास आया और प्रार्थना करने लगा :

"साईं ! दया करो । रात्रि को नींद नहीं आती और दिन को दिखता नहीं । बहुत परेशान हो गया हूँ। इससे तो मर जाऊँ तो अच्छा ।" ऐसा कहकर अपने दुःखड़ों की दास्तां कही ।

गुरुदेव फकीरी अंदाज में बोले : "क्यों सिर खपाता है ? सामने जो आक का पौधा दिख रहा है न, उस के पत्ते को तोड़कर उसका दूध आँखों में डाल दे, ठीक हो जायेगा ।"

> "क्यों सिर खपाता है ? सामने जो आक का पौधा दिख रहा है न, उस के पत्ते को तोड़कर उसका दूध आँखों में डाल दे, ठीक हो जायेगा ।"

यदि वास्तव में देखा जाये तो आक के पत्तों का दूध आँखों में जाने से अंधापन आ जाता है । किन्तु गुरुदेव के वचनों में उस व्यक्ति की श्रद्धा थी । अतः उसने आक के पत्तों को तोड़कर उसका दूध अपनी आँखों में डाल लिया । उसकी आँखें एकदम ठीक हो गई ।

वह व्यक्ति प्रसन्न होकर मिठाई की दुकान पर पहुँचा । मिठाई खरीदकर दुकानदार को ही प्रथम देते हुए कहा : "लो भाई ! प्रसाद ।"

दुकानदार ने पूछा : "भाई ! किस बात का प्रसाद बाँट रहे हो ? पहले बताओ तो सही !"

उसने कहा : "देखो तो सही, मेरी आँखें ठीक हो गई । बुढ़ापे में दिखता नहीं था, बहुत दिनों से परेशान था । किन्तु अब सब कुछ साफ दिखाई देने लगा ।"

"भाई ! किस डॉक्टर की दवाई ली आपने ?"

"मैं किसी डॉक्टर के पास नहीं गया । पूज्य लीलाशाहजी बापू ने जो दवाई बताई, उसीसे ठीक हो गया ।"

"पू. बापू ने कौन-सी दवाई बतायी थी ? मुझे भी वही तकलीफ है जो आपको थी । मैं भी वही इलाज शुरू करूँ, शायद ठीक हो जाये ।"

"यार ! दवाई तो सामने ही थी । तुम्हारी दुकान के सामने जो आक का पौधा है न, उसके पत्ते तोड़कर जरा-सा दूध आँखों में डाल लिया तो आँखें अच्छी हो गयीं ।"

दुकानदार तुरन्त उठा और पौधे के पास पहुँचकर उसने आक के पत्ते का दूध अपनी आँखों में डाल लिया ।

परिणाम वही हुआ, जो होना चाहिए था । अर्थात् वह अंधा हो गया ।

दवा तो दोनों ने एक ही की थी । फिर भी परिणाम विपरीत निकले । क्योंकि एक ने संत की आज्ञानुसार,

श्रद्धा रखकर इलाज किया, जबकि दूसरे ने बिना सोचे-समझे अपनी अल्पमति से उसका अनुकरण किया । अतः वह अपनी नेत्रज्योति खो बैठा ।

संत जब अपनी मस्ती में आकर कुछ कह दें तो वह बाह्य दृष्टि से विपरीत परिणामवाला होने पर भी श्रद्धावान के लिए अनुकूल हो जाता है । जिनकी आज्ञा पाकर प्रकृति भी अपना स्वभाव बदल देती है ऐसे संतों का सान्निध्य पाकर भी हम यदि अपना स्वभाव बदलने को तत्पर न हो सकें तो....क्या कहा जाये ? संतों के सामने प्रकृति तो क्या, हिंसक प्राणी भी अपना हिंसक स्वभाव छोड़कर पालतू पशु बन जाते हैं । जबकि हम अपनी ही अल्पमति के कारण उनसे फायदा नहीं उठा पाते । हमारा यही प्रयास होना चाहिए कि हम उनके वचनों को श्रद्धापूर्वक ग्रहण करके अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें, तभी हमारा मनुष्य जन्म सार्थक सिद्ध हो सकेगा । धनभागी हैं वे लोग जो श्रद्धा व सेवा और साधना से संतों के वचन अपने जीवन में उतारके, जीवन सार्थक करते हैं ।

संत जब अपनी मस्ती में आकर कुछ कह दें तो वह बाह्य दृष्टि से विपरीत परिणामवाला होने पर भी श्रद्धावान के लिए अनुकूल हो जाता है ।

❀

# संत-महापुरुष ही देश की शान हैं

राग-द्वेष और अहं जिनका चला गया है ऐसे ज्ञानी पुरुष के लिए सुख, सुख नहीं होता और दुःख, दुःख नहीं होता । उनके लिए तो सब ब्रह्म ही ब्रह्म है, आनंद ही आनंद है । उनकी जो सेवा करता है, उनकी आज्ञा में रहता है उसका तो बेड़ा पार हो जाता है । किन्तु उनके लिए कोई जरा-सा भी बुरा सोचे तो भले वे संत-पुरुष कुछ भी न कहें किन्तु प्रकृति देर-सबेर उसको ठीक करके ही रहती है क्योंकि प्रकृति सदैव महापुरुषों की सेवा में प्रस्तुत होती है ।

जिनकी सेवा में सारी सृष्टि तत्पर रहती है ऐसे ज्ञानी महापुरुषों की सेवा करनेवाला निश्चित ही अपने भाग्य को सँवार लेता है ।

भारत में अंग्रेजों का शासन था, उस समय की बात है । ज्योतिर्मठ के शंकराचार्यजी ने उस समय भारतवासियों में प्राणबल जगाते हुए कहा :

"इन अंग्रेजों के आगे सिकुड़-सिकुड़कर, दब-दबकर अपना हौसला मत बिगाड़ो और इन दुष्टों का हौसला बुलंद मत होने दो । हिंमत करो, साहस करो और हे भारत- वासियों ! अंग्रेजों के शासन को उखाड़ फेंको ।"

उनकी प्रेरणा से कई भारतवासी स्वतंत्रता-संग्राम के आंदोलन में कूद पड़े । अंग्रेज शासन ने शंकराचार्यजी को पकड़कर जेल भेज दिया और जेल में ही उनका मुकदमा लड़ने के लिए अदालत लगाई गई ।

उस समय स्वतंत्रता-संग्राम का आंदोलन जोर-शोर से चल रहा था । राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी आदि सब भारत को आजाद कराने में लगे थे । शंकराचार्यजी ने भी गर्जना की तो उनको जेल में भेज दिया गया ।

सुबह के समय जज पहुँचा जेल की अदालत में, तो देखा कि मुजरिम हाजिर नहीं है । वास्तव में मुजरिम को अदालत में लाने की जिम्मेदारी एक हिन्दू कर्मचारी की थी । उसने देखा कि शंकराचार्यजी तो भगवान के ध्यान में बैठे हैं । अब उन्हें ध्यान से कैसे जगाया जाये, कैसे उठाया जाये और कैसे ले जाया जाये ? नौकरी जाये तो जाये किन्तु संत का अपमान तो मैं नहीं कर सकता ।

अंग्रेज न्यायाधीश मुजरिम को न पाकर आग-बबूला हो गया और बोला : "दूसरी बैठक में

मुजरिम को जरूर ले आना। दूसरी बैठक दोपहर दो बजे होगी।"

कर्मचारी पुनः लेने गया तो देखा कि शंकराचार्यजी अभी-अभी ध्यान से उठे हैं।

संत है तो संस्कृति है और संस्कृति है तो भारत की शान है। अगर संत न रहे, संस्कृति न रहे तो भारत की शान कहाँ रहेगी ? संतों से भारत गौरवान्वित है।

इधर डॉ. राजेन्द्रप्रसाद को पता चला कि अंग्रेज न्यायाधीश तिलमिला उठा है। न जाने कौन-से अपशब्द कह बैठे हमारे भारत के हिन्दू संत को ! संत है तो संस्कृति है और संस्कृति है तो भारत की शान है। अगर संत न रहे, संस्कृति न रहे तो भारत की शान कहाँ रहेगी ? संतों से भारत गौरवान्वित है।

राजेन्द्रप्रसाद उस समय राष्ट्रपति तो थे नहीं बल्कि अंग्रेज शासक के विरोधी कार्यकर्त्ता थे। वे चिंतित हो उठे कि "भारत के संत का अपमान यदि न्यायाधीश कर बैठेगा तो वह अपमान पूरी भारतीय संस्कृति का अपमान होगा, हिन्दू जाति का अपमान होगा। हे भगवान ! मैं क्या करूँ ? तू ही मुझे राह दिखा। हे मेरे राहनुमा ! मेरी राह रोशन कर।"

जैसे ही शंकराचार्यजी ने कोर्ट में कदम रखा, वैसे ही राजेन्द्रप्रसाद ने टोपी उतारकर उनके चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। न्यायाधीश तो देखता ही रह गया।

ऐसा कहकर वे थोड़ी देर के लिए शांतमना हो गये।

इन्द्रियों का स्वामी मन है, मन का स्वामी प्राण हैं। प्राण तालबद्ध होते हैं, मन शांत होता है तो अंतरात्मा की प्रेरणा मिलती है। संकट की घड़ियों में कई बार ऐसे चमत्कार हो जाते हैं कि जो कल्पनातीत होते हैं।

राजेन्द्रप्रसाद को युक्ति आ गयी। वे पहुँचे जेल में। जहाँ अदालत लगी थी वहाँ पहुँचे। राजेन्द्रप्रसाद प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता थे, पढ़े-लिखे, बैरिस्टर थे, सच्चाई थी उनमें। शंकराचार्य को लाया जा रहा था कोर्ट में और ये पहुँच गये। जैसे ही शंकराचार्यजी ने कोर्ट में कदम रखा, वैसे ही राजेन्द्रप्रसाद ने टोपी उतारकर उनके चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया।

न्यायाधीश तो देखता ही रह गया कि इतना प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता, विद्वान बैरिस्टर और इस साधु के चरणों में ?

एक सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं पढ़े-लिखे वकील को सूखे बाँस की तरह शंकराचार्यजी के चरणों में गिरते देखकर अंग्रेज न्यायाधीश का जो अहंकार था और क्रोध की जो ज्वालाएँ थी वे एकदम शांत हो गई और उस न्यायाधीश को न्याय देना पड़ा कि शंकराचार्यजी निर्दोष हैं। उन्हें बाईज्जत बरी किया जाता है।

संतों की शान समाज की शान है। संतों की शान देश की शान है। संत की सेवा करके भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रबाबू ने एक ऐसा पुण्य कमाया कि जिसके फलस्वरूप भगवत्कथा एवं सत्संग के स्थान पर उनका नाम आदर से लिया जा रहा है।

संतों की सेवा बड़े भाग्यशालियों को मिलती है। राजा रामचन्द्र, राजा अश्वपति, राजा जनक, राजा भोज सत्संग-श्रवण करते थे। सभा में संतों का बड़ा आदर होता था। वे संयमी सदाचारी रहे और प्रजा का लोक और परलोक सँवारनेवाले सिद्ध हुए। ऐसे संतों के प्रति श्रद्धा-भाव रखने से एवं ऐसे महापुरुषों के आज्ञापालन से ही मानव-जन्म सफल हो सकता है।

❀

# झूठे आरोपों से सावधान !

इस संसार में सज्जनों, सत्पुरुषों और संतों को जितना सहन करना पड़ा है उतना दुष्टों को नहीं । ऐसा मालूम होता है कि इस संसार ने सत्य और सत्त्व को संघर्ष में लाने का मानो ठेका ले रखा है । यदि ऐसा न होता तो गाँधी को गोलियाँ नहीं खानी पड़ती, ईसा मसीह को शूली पर न लटकना पड़ता, दयानंद को जहर न दिया जाता और लिंकन व केनेडी की हत्या न होती । निन्दा करनेवाला व्यक्ति भी किसी दूसरे का बुरा करने के प्रयत्न के साथ विकृत मजा लेने का प्रयत्न करता है । इस क्रिया में बोलने वाले के साथ सुननेवाले का भी सत्यानाश होता है । निन्दा एक प्रकार का तेजाब है । वह देनेवाले की तरह लेनेवाले को भी जलाता है ।

यह दुनिया का दस्तूर ही है कि जब-जब भी संसार में व्याप्त अन्धकार को मिटाने के लिए जो दीपक अपने आपको जलाकर प्रकाश देता है, दुनिया की सारी आँधियाँ, सारे तूफान उस प्रकाश को बुझाने के लिए दौड़ पड़ते हैं निन्दा, अफवाह और अनर्गल कुप्रचार की हवा को साथ लेकर, लेकिन...

फानूस बनकर जिसकी हिफाज़त हवा करे ।
वो शमां भी क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे ॥

ज्ञानी का ज्ञानप्रदीप सर्वत्र प्रकाश फैलाता है, किन्तु मनुष्य तो आँख मूँदकर बैठा है । उस पर इस प्रकाश का कोई असर नहीं होता । ऐसा आदमी दूसरे को भी सलाह देता है कि तुम भी आँखें बंद कर लो । इस प्रकार वह दूसरे को भी सत्संग के प्रकाश से दूर रखता है ।

समाज जब किसी ज्ञानी संतपुरुष की शरण, सहारा लेने लगता है तब राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित कार्यों में संलग्न असामाजिक तत्त्वों को अपने षड़यंत्रों का भंडाफोड़ हो जाने का एवं अपना अस्तित्व खतरे में पड़ने का भय होने लगता है । परिणामस्वरूप अपने कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए वे उस दीए को ही बुझाने के लिए नफरत, निन्दा, कुप्रचार, असत्य, अमर्यादित व अनर्गल आक्षेपों व टीका-टिप्पणियों की आँधियों को अपने हाथ में लेकर दौड़ पडते हैं, जो समाज में व्याप्त अज्ञानांधकार को नष्ट करने के लिए महापुरुषों द्वारा प्रज्ज्वलित हुआ था ।

ये असामाजिक तत्त्व अपने विभिन्न षड़यंत्रों द्वारा संतों व महापुरुषों के भक्तों व सेवकों को भी गुमराह करने की कुचेष्टा करते हैं । समझदार साधक या भक्त तो उनके षड़यंत्रजाल में नहीं फँसते, महापुरुषों के दिव्य जीवन के प्रतिपल से परिचित उनके सच्चे अनुयायी कभी भटकते नहीं, पथ से विचलित होते नहीं अपितु सश्रद्ध होकर उनके दैवी कार्यों में अत्यधिक सक्रिय व गतिशील होकर सदभागी हो जाते हैं लेकिन जिन्होंने साधना के पथ पर अभी-अभी कदम रखे हैं ऐसे कुछ नवपथिक गुमराह हो जाते हैं और इसके साथ ही आरंभ हो जाता है नैतिक पतन का दौर, जो संतविरोधियों की शांति और पुण्यों को समूल नष्ट कर देता है । कालान्तर में उनका सर्वनाश कर देता है । कहा भी गया है :

संत सतावे तीनों जावे, तेज, बल और वंश ।
ऐड़ा-ऐड़ा कई गया, रावण, कौरव, केरो, कंस ॥

साथ ही नष्ट होने लगती है समाज व राष्ट्र से

महापुरुषों के दिव्य जीवन के प्रतिपल से परिचित उनके सच्चे अनुयायी कभी भटकते नहीं, पथ से विचलित होते नहीं अपितु सश्रद्ध होकर उनके दैवी कार्यों में अत्यधिक सक्रिय व गतिशील होकर सदभागी हो जाते हैं लेकिन जिन्होंने साधना के पथ पर अभी-अभी कदम रखे हैं ऐसे कुछ नवपथिक गुमराह हो जाते हैं ।

मानवता, आस्तिकता, स्वर्गीय सरसता, लोकहित व परदुःखकातरता, सुसंस्कारिता, चारित्रिक सम्पदा तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना । इससे राष्ट्र नित्य-निरंतर पतन के गर्त में गिरता जाता है ।

जिनका जीवन आज भी किसी संत या महापुरुष के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सान्निध्य में है, उनके जीवन में आज भी निश्चिन्तता, निर्विकारिता, निर्भयता, प्रसन्नता, सरलता, समता व दयालुता के दैवी गुण साधारण मानवों की अपेक्षा अधिक ही होते हैं तथा देर सवेर वे भी महान हो जाते हैं । जिनका जीवन महापुरुषों का, धर्म का सामीप्य व मार्गदर्शन पाने से कतराता है, ऐसे लोग अपने पास सुख-संपदा होते हुए भी प्रायः अशांत, उद्विग्न व दुःखी देखे जाकर विषय-विकार, धोखा-धड़ी व पाप-ताप में भटककर बेचारे कुकर्म व अशांति की आग में जलते रहते हैं ।

शास्त्रों में आता है कि संत की निन्दा, विरोध या अन्य किसी त्रुटि के बदले में संत क्रोध कर दें, श्राप दे दें अथवा कोई दण्ड दे दें तो इतना अनिष्ट नहीं होता, जितना अनिष्ट संतों की खामोशी व सहन-शीलता के कारण होता है । सच्चे संतों की बुराई का फल भोगना ही पड़ता है । संत तो दयालु एवं उदार होते हैं, वे तो क्षमा कर देते हैं लेकिन प्रकृति कभी नहीं छोड़ती । इतिहास उठाकर देखें तो पता चलेगा कि सच्चे संतों व महापुरुषों के निन्दकों को कैसे-कैसे भीषण कष्टों को सहते हुए बेमौत मरना पड़ा है, और पता नहीं, किन-किन नरकों में सड़ना पड़ा है ।

सच्चे संतों की बुराई का फल भोगना ही पड़ता है । संत तो दयालु एवं उदार होते हैं, वे तो क्षमा कर देते हैं लेकिन प्रकृति कभी नहीं छोड़ती ।

अतैव समझदारी इसीमें है कि हम संतों की प्रशंसा करके या उनके आदर्शों को अपनाकर लाभ न ले सकें तो उनकी निन्दा करके अपने पुण्य व शांति भी नष्ट नहीं करनी चाहिए ।

सत्यानाश कर डालने के बाद पश्चात्ताप करने का कोई अर्थ ही नहीं । इन्सान भी बड़ा ही अजीब किस्म का व्यापारी है । जब चीज़ हाथ से निकल जाती है तब वह उसकी कीमत पहचानता है । जब महापुरुष शरीर छोड़कर चले जाते हैं, तब उनकी महानता का पता लगने पर वह पछताते हुए रोते रह जाता है और उनके चित्रों को दीवार पर सजाता है लेकिन उनके जीवित सान्निध्य में कभी अपना दिल दिया होता तो बात ही कुछ और होती ।

अब पछताए होत क्या...
जब संत गये निजधाम... ?

संतों का सान्निध्य व उनकी वाणी में मानवमन को सरस व समुन्नत बनाने का विश्वदुर्लभ गुण होता है । यह संतों के प्रभाव का ही परिणाम है कि एक हजार बरस की लम्बी दासता के दौरान अनगिनत विदेशी आक्रान्ताओं के बर्बरतापूर्वक किये आक्रमणों व अत्याचारों के बाद भी हमारा धर्म और इसके पवित्र सिद्धान्तों को वे तनिक भी तहस-नहस न कर सके । फलतः हमारे प्यारे भारत में मानवता, आस्तिकता, स्वर्गीय सरसता, लोकहित एवं परदुःखकातरता की भावना यथावत बनी हुई है, जिसके कारण ही अनेकानेक विषम परिस्थितियों से जूझते रहने के उपरान्त भी इस देश का गौरव आज भी सम्पूर्ण भूमंडल पर व्याप्त है ।

स्वामी विवेकानंद की तेजस्वी और अद्वितीय प्रतिभा के कारण कुछ लोग ईर्ष्या से जलने लगे । कुछ दुष्टों ने उनके कमरे में एक वेश्या को भेजा । श्री रामकृष्ण परमहंस को भी बदनाम करने के लिए ऐसा ही घृणित प्रयोग किया गया, किन्तु उन वेश्याओं ने तुरन्त ही बाहर निकलकर दुष्टों की बुरी तरह खबर ली और वे दोनों संत विकास के पथ पर आगे बढ़े ।

शिर्डीवाले साईंबाबा, जिन्हें आज लाखों लोग नवाजते हैं, उनके हयातिकाल में उन पर भी दुष्टों

ने कम जुल्म न किये । उन्हें भी अनेकानेक षड़यंत्रों का शिकार बनाया गया ।

पैठण के एकनाथजी महाराज पर भी दुनियावालों ने बहुत आरोप-प्रत्यारोप गढ़े । अपनी जातिवाले ब्राह्मणों ने उनको जाति से ही निष्कासित कर दिया तथा पैठण उन पर थूका । अंततः उन लोगों को अपनी गलती का आभास हुआ और क्षमायाचना कर वे एकनाथजी के साथ हुए । एकनाथजी व उनकी भागवत आज विश्व भर में प्रतिष्ठित है ।

संत ज्ञानेश्वर पर भी विरोधियों ने कम जुल्म नहीं किये । वे विरोधी आज कहाँ....! और ज्ञानेश्वरजी की समाधि पर आज भी लाखों लोग श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं ।

संत तुकाराम महाराज को तो बाल मुंडन करवाकर गधे पर उल्टा बिठाकर जूते और चप्पल का हार पहनाकर पूरे गाँव में घुमाया, बेइज्जती की एवं न करने योग्य कार्य किया ।

ऋषि दयानंद के ओज-तेज को न सहने वालों ने बाईस बार उनको जहर देने का बीभत्स कृत्य किया और अन्ततः वे नराधम इस घोर पातक कर्म में सफल तो हुए लेकिन अपनी सातों पीढ़ियों को नरकगामी बनाने वाले हुए ।

हरि गुरु निन्दक दादुर होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

भगवान राम के गुरुदेव वशिष्ठजी ने योगवाशिष्ठ महारामायण में कहा है :

"संत पुरुष में एक भी सदगुण हो तो उसे ग्रहण करना चाहिए । अपनी मति गति से उनमें कोई कमी दिखती तो वह नहीं लेनी चाहिए । संतों की कभी भी निन्दा नहीं करना चाहिए । हे रामजी ! लोग मेरे लिए क्या-क्या बोलते हैं मुझे सब पता है लेकिन मेरा दयालु स्वभाव है ।"

**रामराज्य में वशिष्ठजी जैसे सद्गुरु को भी निन्दकों ने न छोड़ा तो आज जैसे युग में कोई महापुरुषों की निन्दा करे तो पक्का व समझदार साधक उनके चक्कर में थोड़े ही आएगा !**

रामराज्य में वशिष्ठजी जैसे सद्गुरु को भी निन्दकों ने न छोड़ा तो आज जैसे युग में कोई महापुरुषों की निन्दा करे तो पक्का व समझदार साधक उनके चक्कर में थोड़े ही आएगा ! लल्लु पंजू भले ही उनकी बातों में आकर अपने सिर पर पाप चढ़ाए ।

बुद्ध, नानक, कबीर, महावीर, जीसस, सुकरात, मीरा, शबरी, सीता जैसे अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जिन्हें अंधकार की आसुरी शक्तियों के इस प्रकार के क्रूर हमलों का शिकार होना पड़ा, लेकिन अन्ततः ये सारे हमले निष्फल हुए, षड़यंत्रों की बारुदी सुरंगें ध्वस्त हुई और सच्चे संत सदा ही अग्निपरीक्षाओं में कुन्दन जैसे खरे निकले ।

**सत्पुरुष हमें जीवन के शिखर पर ले जाना चाहते हैं किन्तु कीचड़ उछालनेवाला आदमी हमें घाटी की ओर खींचकर ले जाना चाहता है । उसके चक्कर में हम क्यों फँसें ?**

समाज को गुमराह करनेवाले संतद्रोही लोग संतों का ओज, प्रभाव, यश देखकर अकारण जलते-पचते रहते हैं क्योंकि उनका स्वभाव ही ऐसा है । जिन्होंने संतों को सुधारने का ठेका ले रखा है उनके जीवन की गहराई में देखोगे तो कितनी दुष्टता भरी हुई है ! अन्यथा सुकरात, जीसस, ज्ञानेश्वर, रामकृष्ण, रमण महर्षि, नानक और कबीर जैसे संतों को कलंकित करने का पाप ही वे क्यों मोल लेते ? ऐसे लोग उस समय में ही थे ऐसी बात नहीं अपितु आज भी मिला करेंगे ।

यह सत्य है कि कच्चे कान के लोग दुष्ट निन्दकों

( शेष पृष्ठ १४ पर)

# सिखधर्म में शिवोपासना

सिख धर्म के अंतिम गुरु संत श्री गुरु गोविन्दसिंह महाराज द्वारा लिखित 'दशम ग्रन्थ साहिब' में शिवोपासना का विशेष वर्णन है । गुरु गोविन्दसिंह ने शिवोपासना की महिमा का वर्णन ४९८ छन्दों में बड़े ही मनोयोग से किया है । 'दशमग्रन्थ साहिब' में विभिन्न अवतारों का वर्णन हुआ है, जिसमें प्रमुख रूप से शिवोपासना की चर्चा रुद्रावतार-वर्णन में हुई है । 'दशमग्रन्थ साहिब' में विष्णु के रुद्र के रूप में अवतार ग्रहण करने का कारण इस प्रकार दिया हुआ है :

जग जीवन भार भरी धरणी ।
दुःख आकल जात नहीं वरणी ॥
धर रूप गउ दध सिंध गई ।
जग नाइक पै दुख रीत भई ॥

अर्थात् गाय का रूप धारण कर पृथिवी जग नायक के सम्मुख गयी और उसने अपनी व्यथा उन्हें बतायी, श्रीकाल प्रसन्न हुए और उन्होंने विष्णु को बुलाकर अवतार ग्रहण करने की आज्ञा दी ।

श्री गुरु गोविन्दसिंह के अनुसार रुद्रावतार धारण करके विष्णुजी क्या कर्म करते हैं, इसका सटीक वर्णन इस प्रकार हुआ है :

तब करत सकल दानव संधार ।
कर दनुज प्रलव संतन उधार ॥
इह भाँति सकल करि दुष्ट नास ।
पुनि करत हिरदै भगतन वास ॥

श्री गुरु गोविन्दसिंह ने भगवान् शिव द्वारा त्रिपुर एवं अन्धक नामक महाबली राक्षसों के वध का वर्णन किया है, जो जनकल्याणकारी भावना से हुआ है । त्रिपुर नामक तीन पंखोंवाला एक दैत्य वरदान प्राप्त करने के बाद इतना महाबली हो गया कि उसने चौदह भुवनों को जीत लिया । उस राक्षस को वरदान था कि जो कोई उसे एक बाण में मारने की शक्ति रखता हो, वही उस विकराल राक्षस को मार सकता है । जगत के जीवों का उद्धार करने तथा उस असुर का वध करने के लिए भगवान शिव चल पड़े । क्रुद्ध होकर उन्होंने एक ही बाण में त्रिपुर राक्षस का नाश कर दिया । यह लीला देखकर संतजन प्रसन्न हुए और आकाश से देवताओं द्वारा पुष्पवर्षा होने लगी । जय-जयकार की ध्वनि गूँज उठी । हिमालय पर्वत में हलचल मच गयी और भूमण्डल काँप उठ । 'श्रीदशमग्रन्थ साहिब' में श्री गुरु गोविन्दसिंह ने इस त्रिपुर राक्षस को नष्ट करने की युद्धकला का वर्णन किया है । इसी प्रकार उन्होंने अन्धकासुर राक्षस के वध की कथा का भी वर्णन उस ग्रंथ में किया है । इतना ही नहीं, श्री

गुरु गोविन्दसिंह महाराज ने 'दशमग्रन्थ साहिब' के रुद्रावतार वर्णन खण्ड में ५० छन्दों में जलांधर जन्म एवं युद्ध, सती का यज्ञकुण्ड में प्रवेश, शिव का दक्ष प्रजापति से युद्ध आदि प्रसंगों का भी वर्णन किया है। इस प्रकार श्री गुरु गोविन्दसिंह ने भगवान शिव की महिमा का वर्णन 'दशमग्रन्थसाहिब' में पूर्ण मनोयोगपूर्वक किया है, जो हिन्दू-सिख एकता का ज्वलन्त उदाहरण है और हम सब के लिए प्रेरणा-स्रोत है।

('कल्याण' से साभार)

❀
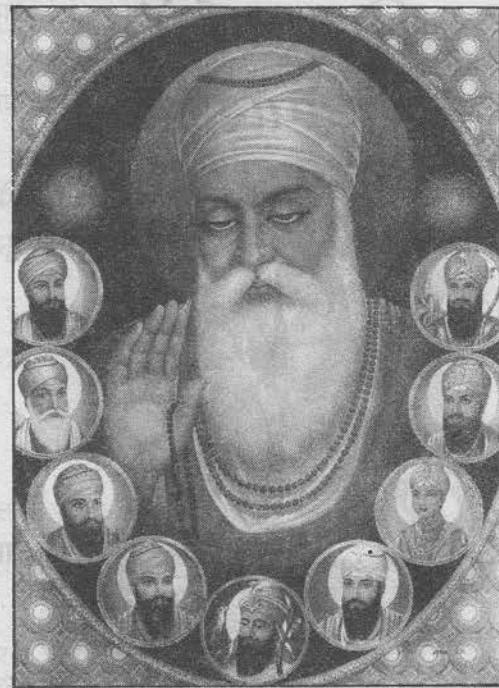
# विचित्र आशीर्वादों का रहस्य

सिख धर्म के आदि गुरु श्री नानकजी भारतीय संस्कृति के दिव्य ज्ञान रूपी अमृत को यत्र-तत्र-सर्वत्र बाँटने के लिये विचरण किया ही करते थे। सत्प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करते हुए भारतीय जनमानस में आध्यात्मिक चेतना का संचार करना ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का सहज स्वभाव होता है। गुरु नानक ने अनेक प्रकार के कष्ट, संकट, निन्दा, असत्य दोषारोपण, अनर्गल कुप्रचार आदि को सहन करते हुए भी उस कंटकाकीर्ण पथ का परित्याग न किया।

गुरु नानक का यश तथा धर्म के प्रति प्रगाढ़ अनुराग की उनकी कीर्ति दूर देशों तक फैली हुई थी। हजारों लोग उनके दर्शन को व्याकुल रहते थे तथा उनका नाम सुनकर बड़ी भारी मात्रा में जनसमुदाय एकत्रित हो जाता था।

एक बार नानकजी धर्म का प्रचार करते हुए घूमते फिरते किसी गाँव में पहुँचे। गाँववालों की खुशी का तो ठिकाना न रहा। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत के चरण जिस धरा की धूल पर पड़ते हैं, वह धूल लोगों के मस्तक पर सुशोभित होती है। गाँव के लोग उमंग व उत्साह के साथ नानकजी का स्वागत-सत्कार करके उनके भोजन-आवास के प्रबन्ध में जुट गये।

फिर सत्संग-समारोह का आयोजन हुआ जिसमें गाँव के मुखिया ने अपने स्वागत भाषण में बोलते हुए कहा कि : "गिरे हुए लोगों को प्रेम-सहारा देकर उठाने वाले, विकारों व मनोमालिन्य का हरण करने वाले तथा अपनी अमृतवाणी से अपराधियों को भी पापों से विमुक्त बनाने वाले, शक्तिपात-वर्षा के समर्थ आचार्य गुरु नानकजी से बिनती है कि सदियों से उपेक्षित व सत्संग के प्यासे हमारे इस गाँव में ऐसा अमृतरस उडेलें कि बस, हम डोलते ही रह जाएँ।"

> आज भी समय की यहाँ माँग है कि सज्जन लोग अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि से समय-समय पर उजड़कर अपनी सज्जनता का बीजारोपण अन्यत्र भी करें।

गुरु नानक ने गाँव वालों की आतिथ्य-भावना, प्रेम, उत्तम विचार, उत्साहयुक्त सद्व्यवहार एवं संतों के प्रति आदरयुक्त श्रद्धा-भक्ति को देखते हुए मानव

जीवन के सर्वांगीण विकास में सहायक आध्यात्मिक प्रसाद को मुक्त हस्त से जनता में लुटाकर ईश्वर की महान महिमा का सत्संग में वर्णन किया। गाँववालों के व्यापक सहयोग, एकता, शान्त मस्तिष्क, स्वच्छता, शिक्षा, ज्ञान और कलाप्रेम से वे बहुत प्रभावित हुए। सत्परम्पराओं का अनुकरण तथा सदाचार के दैवी गुण गाँव वालों में देखकर सत्संग की पूर्णाहुति में अनायास ही नानकजी के मुँह से निकला :

"उजड़ जाओ ! उजड़ जाओ !"

गाँव वाले गुरुजी का यह आशीर्वाद सुनकर आश्चर्य-चकित रह गये कि गुरुजी यह क्या कह रहे हैं !

दूसरे दिन वहाँ से गुरु नानक अगले गाँव में गये। आश्चर्य का विषय था कि यह गाँव पहले गाँव से एकदम विपरीत था। यहाँ के लोग संतों का अनादर करने वाले, मानवता के मूलभूत प्रयोजन को न समझने वाले, परस्पर शत्रुता, विद्वेष व पाशविकता की दुष्प्रवृत्तियों में संलग्न रहकर गाँव के विकास में बाधक बन अनीति, अज्ञान व अधर्म से युक्त अनुशासनहीन थे।

कुसंस्कारों से भरे हुए इस गाँव के लोगों ने नानकजी तथा उनके शिष्यों का तिरस्कार किया, उन्हें कटुवचन कहे। नानकजी पर असत्य, अमर्यादित, अनर्गल दोषारोपण कर उनका चरित्र हनन करना चाहा तथा वे दुष्ट दुर्जन संतजी से लड़ने-झगड़ने पर आमादा हो गये।

उस गाँव के लोगों ने उनका सत्संग-प्रवचन भी न सुना। चलते समय नानकजी ने गाँववालों को आशीर्वाद दिया :

"स्थायी रहो ! यहीं जमे रहो ! आबाद रहो !"

गाँववाले बड़े खुश हुए कि नानकजी ने क्या खूब कहा है हमारे लिये ! 'आबाद रहो।' हमें तो अच्छा आशीर्वाद मिला है।

नानकजी जब गाँव से बाहर निकले तो उनके साथ चल रहे शिष्यों ने उनसे पूछा:

"हे प्रभू ! आपने अपना अत्यधिक उत्साह व प्रेम से स्वागत-सत्कार व आयोजन करने वालों को तो 'उजड़ जाओ' कहा और आपकी निन्दा, अपमान व तिरस्कार करनेवालों को 'आबाद रहो' के आशीर्वाद दिये। इसका गुप्त रहस्य कृपया हमें समझाने की कृपा करें।"

गुरु नानक ने स्पष्टता करते हुए कहा :

"शिष्यों ! सज्जन लोग उजड़ेंगे तो इधर-उधर अन्यत्र स्थानों पर बिखरकर जहाँ कहीं नई जगह जायेंगे, अपने चरित्र, वाणी और सदाचार की सुवास ही फैलाएँगे, अपने सद्विचारों द्वारा सत्पुरुष नई जगह जाकर धर्म, कर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, मानसिक संतुलन, दूरदर्शिता व सत्परम्पराएँ फैलाएँगे। सत्प्रवृत्तियाँ फैलेंगी तो पिछड़ा हुआ समाज उन्नति करेगा। सज्जनता फैलाने के लिये सज्जनों का अपनी जन्मभूमि से उजड़ना ही ठीक है।"

नानकजी का यह आशीर्वाद बिल्कुल ही ठीक था। आज भी समय की यहाँ माँग है कि सज्जन लोग अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि से समय-समय पर उजड़कर अपनी सज्जनता का बीजारोपण अन्यत्र भी करें।

जन्मभूमि के साथ मनुष्य के अनेकानेक संस्कार जुड़े होते

> दुनिया में आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें से प्रत्येक को अपनी जन्मभूमि छोड़कर अन्यत्र ही कार्यक्षेत्र बनाना पड़ा है।

> दुष्टजन अपनी आदत से मजबूर होते हैं। वे निन्दा, झगड़ा, वैर, विरोध, छिद्रान्वेषण में ही लगे रहते हैं। शुभ कर्मों में वे हमेशा एक दूसरे की टाँग खींच कर विकास के कार्यों में बाधक बनते हैं।

हैं, राग-द्वेष, अपना-पराया, स्मृति-अभ्यास, सम्पर्क-स्वभाव आदि के अनेक ऐसे प्रवाह मनुष्य के साथ जुड़े होते हैं कि अत्यधिक रोकथाम करने पर भी मनुष्य की चिन्तन-प्रकृति, अभिरुचि और आदत उसी अभ्यस्त ढर्रे में अनायास ही घूमती रहती है। अतः आत्मचिंतन के अभ्यास व जीवन के विकास हेतु स्थान परिवर्तन की आवश्यकता पड़ती है।

दुनिया में आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें से प्रत्येक को अपनी जन्मभूमि छोड़कर अन्यत्र ही कार्यक्षेत्र बनाना पड़ा है, फिर चाहे राम हो, कृष्ण हो, बुद्ध, महावीर, नानक, शंकराचार्य, कबीर, चैतन्य, ज्ञानेश्वर, समर्थ, रामकृष्ण, गांधी, अरविन्द, रमण महर्षि हों या जीसस, मोहम्मद व जरथुस्त्र हों।

इन महापुरुषों को जन्मभूमि से प्रेम न रहा हो ऐसी बात नहीं थी अपितु परिस्थिति का मनःस्थिति पर जो प्रभाव पड़ता है उस वजह से लक्ष्य की ओर गतिशील होने में जो व्यवधान पड़ता है, उसे देखते हुए दूरदर्शिता ने यही सुझाया कि स्थान बदलकर ही महान कार्य सम्पन्न कर सकने में सुविधा होती है।

शिष्यों ने पूछा : "भगवन्! दुष्टों के जमे रहने का क्या आशय है?"

तब नानकजी बोले : "वत्स! दुष्टजन अपनी आदत से मजबूर होते हैं। वे निन्दा, झगड़ा, वैर, विरोध, छिद्रान्वेषण में ही लगे रहते हैं। शुभ कर्मों में वे हमेशा एक दूसरे की टाँग खींच कर विकास के कार्यों में बाधक बनते हैं। संतों व सज्जनों की सत्प्रवृत्तियों की निन्दा करना, उनके महान कार्यों में दोषदृष्टि रखना दुष्ट पामरों का काम होता है। ऐसे पापी लोग सर्वत्र अशांति उत्पन्न न करें इसलिये उनके एक ही जगह रहने में भलाई है। 'जमे रहो' से मेरा आशय है कि ये इसी गाँव में बसे रहें ताकि दुष्टता यहीं तक सीमित बनी रहे और समाज में फैलने ही न पाये।"

❀

(पृष्ठ १० का शेष)

के वाक्‌जाल में फँस जाते हैं। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में आत्मशांति देनेवाला, परमात्मा से जोड़नेवाला कोई काम नहीं किया है उसकी बात सच्ची मानने का कोई कारण ही नहीं है। तदुपरान्त, मनुष्य को यह भी विचार करना चाहिए कि जिसकी वाणी और व्यवहार में हमें जीवन-विकास की प्रेरणा मिलती है, उसका कोई अनादर करना चाहे तो हम उस महापुरुष की निन्दा कैसे सुन लेंगे ? व कैसे मान लेंगे ?

सत्पुरुष हमें जीवन के शिखर पर ले जाना चाहते हैं किन्तु कीचड़ उछालनेवाला आदमी हमें घाटी की ओर खींचकर ले जाना चाहता है। उसके चक्कर में हम क्यों फँसें ? ऐसे अधम व्यक्ति के निन्दाचारों में पड़कर हमें पाप की गठरी बाँधने की क्या आवश्यकता है ? इस अशांतियों में वृद्धि करने से क्या लाभ ?

बड़े धनभागी हैं वे सत्‌शिष्य जो तितिक्षाओं को सहने के बाद भी अपने सद्‌गुरु के ज्ञान और भारतीय संस्कृति के दिव्य-कणों को दूर-दूर तक फैलाकर मानव-मन पर व्याप्त अंधकार को नष्ट करते रहते हैं।

अतः साधक भाइयों! हमको भी ऐसा कुप्रचार करनेवाले दुष्ट निन्दकों से बचकर अपने मन पर व्याप्त अंधकार को नष्ट करने के लिए गुरुसेवा तथा गुरु-प्रचार में और तत्परता एवं दृढ़ता से लगकर अपना बेड़ा पार कर लेना होगा। उन विकास के वैरियों से सावधान!

नर नहीं वह जन्तु है,<br>
जिस नर को धर्म का भान नहीं।<br>
व्यर्थ है वह जीवन जिसमें,<br>
आत्मतत्त्व का ज्ञान नहीं॥<br>
चाँदी के चन्द टुकडों पर,<br>
अपनी जिन्दगी बेचने वालों!<br>
मुर्दा है वह देश जहाँ पर,<br>
संतों का सम्मान नहीं॥

❀
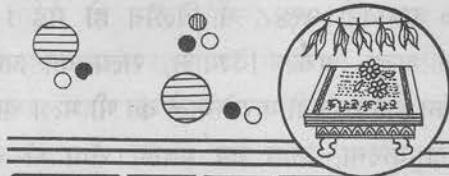
# महात्मा गाँधी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥
(ईशावास्योपनिषद)

'इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ यह जगत है, सब ईश्वर से व्याप्त है। उस ईश्वर के द्वारा तुम्हारे लिए जो कुछ त्याग किया गया है अर्थात् प्रदान किया गया है उसीको अनासक्ति से भोगो। किसीके धन की इच्छा मत करो।'

महात्मा गांधी ने इस मंत्र को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न किया था। वे एक पत्र में लिखते हैं : "मृत्यु के नजदीक होने पर ही भगवद्भजन क्यों ? जिसे मैं भगवद्भजन मानता हूँ वह तो प्रतिक्षण चलता ही है। भगवान की सृष्टि की भगवत्प्रीत्यर्थ सेवा ही उसका भजन है।

पोरबंदर (सुदामापुरी) में महात्मा गांधीजी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ में वैष्णव कुल में हुआ था। पोरबंदर राज्य में उनके पिता कर्मचंदजी गाँधी दीवान थे। वहाँ उनके पितामह प्रधानमंत्री रह चुके थे। गाँधीजी की माता पूतलीबाई तो साक्षात् वैष्णवधर्म की जीती-जागती प्रतिमा ही थी। उनका प्रभाव मोहनदास पर बहुत अधिक था। गाँधीजी उनको अपना गुरु मानते थे।

रामनाम की महिमा में उन्होंने बहुत कुछ कहा है : "पावन होने के लिये रामनाम हृदय से लेना चाहिए। जीभ और हृदय को एकरस करके रामनाम लेना चाहिए। मैं अपना अनुभव सुनाता हूँ। संसार में यदि मैं व्यभिचारी होने से बचा हूँ तो रामनाम की बदौलत है। जब-जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं, मैंने रामनाम का सहारा लिया है और मैं बच गया हूँ। अनेक संकटों से रामनाम ने मेरी रक्षा की है।"

गाँधीजी गीता के सम्बन्ध में कहते हैं : "मेरे लिये तो गीता ही संसार के सब धर्मग्रन्थों की कुँजी हो गई है। संसार के सब धर्मग्रंथों में गहरे-से गहरे जो रहस्य भरे हुए हैं, गीता उन सबको मेरे लिए खोलकर रख देती है।"

गाँधीजी गीता और रामचरितमानस की महिमा एक जगह इस प्रकार कहते हैं : "भगवद्गीता और तुलसीदासजी की रामायण से मुझे अत्यधिक शांति मिलती है। मैं खुलमखुला कबूल करता हूँ कि कुरान, बाईबल तथा दुनिया के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा आदरभाव होते हुए भी मेरे हृदय पर उनका उतना असर नहीं होता, जितना की श्रीकृष्ण की गीता और तुलसीदासजी की रामायण का होता है।"

ईश्वर के प्रति श्रद्धा ही उनके जीवन की धुरी थी, जिसके बल पर वे प्रत्येक क्षेत्र में कूद पड़ते और सफल होते थे। ईश्वर को वे सदा-सर्वदा अपने सामने उपस्थित अनुभव करते और कभी भेद-भाव उनके मन में नहीं आता। ईश्वर के अस्तित्व में उनका अडिग विश्वास था। हम सब उसे एक आवाज से अनेक और अनंत नामों से पुकारते हैं।

"जब-जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं, मैंने रामनाम का सहारा लिया है और मैं बच गया हूँ। अनेक संकटों से रामनाम ने मेरी रक्षा की है।"

वह एक है, अनेक है। अणु से छोटा है और हिमालय से भी बड़ा है। समुद्र के एक बिन्दु में भी समा जा सकता है और ऐसा भारी है कि सात समुद्र मिलकर भी उसे सहन नहीं कर सकते। उसे जानने के लिए बुद्धिवाद का उपयोग ही क्या हो सकता है ! वह तो बुद्धि का अधिष्ठान है, आधार है। संसारभर की सारी बुद्धियाँ जहाँ समाप्त हो जाये वहाँ से वह शूरू होता है। ईश्वर का अस्तित्व मानने के लिये श्रद्धा की आवश्यकता है। मेरी श्रद्धा बुद्धि से भी इतनी अधिक आगे दौड़ती है कि मैं समस्त संसार का विरोध होने पर भी यही कहूँगा कि ईश्वर है और है ही है।

इसी संदर्भ में सन् १९३१ में लंदन के गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् जब विश्वप्रसिद्ध आईन्स्टाइन एवं महात्मा गाँधी के बीच वार्तालाप हुआ तब मि. आईन्स्टाइन ने कहा :

"नक्षत्रों, ग्रहों और तारों को देखकर एवं उनकी गति को देखकर मानना पड़ता है कि हमारी मति जहाँ नहीं जाती उसके पार कोई सत्य है उसीको गॉड कहें, भगवान कहें या ईश्वर कहें। मानना पड़ता है कि ईश्वर का अस्तित्व है।"

प्रत्युत्तर में महात्मा गाँधी ने कहा : "मि. आईन्स्टाइन ! मैं तो यह बात मानने को भी राजी हूँ कि तुम और मैं नहीं हो सकते लेकिन परमात्मा की सत्ता अवश्य है। तुम्हारा और हमारा पहले अस्तित्व न था, बाद में नहीं रहेगा लेकिन वह परमात्मा तो पहले भी था, अभी भी है और बाद में भी रहेगा।"

"मैं खुलमखुला कबूल करता हूँ कि कुरान, बाईबल तथा दुनिया के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा आदरभाव होते हुए भी मेरे हृदय पर उनका उतना असर नहीं होता, जितना की श्रीकृष्ण की गीता और तुलसीदासजी की रामायण का होता है।"

ईश्वर में गाँधीजी का ऐसा अटूट विश्वास था।

हत्यारे ने महात्मा गाँधी की छाती में पिस्तौल से तीन गोलियाँ मारी। वे रामनाम लेते हुए गिर पड़े और उनकी आत्मा अपने अंशी भगवान में सदा के लिये ३० जनवरी १९४८ में विलीन हो गई।

अटल श्रद्धा, अचल विश्वास, सत्य का आग्रह, अहिंसा का पालन, बुरा करने वाले का भी भला चाहना और भला करना, क्रोध का बदला सेवा से देना, रामनाम एवं ईश्वर में अटल विश्वास, गो माता की भक्ति आदि अनेकों अप्रतिम गुणों का समूह यदि एक जगह देखना हो तो ऐसा व्यक्ति गाँधीजी थे।

*- एक साधक*

❀

# साधना के विघ्नों को पहचानो

एक बात साधक को स्मरण में रखनी चाहिये कि जो सत्संग-भजन छुड़ा दे वह अपना हितचिन्तक नहीं है। भगवान कभी दर्शन दें भी तो वे दर्शन देकर चले जाएँगे। पास में तो केवल किया हुआ भजन ही रहनेवाला है। कई लोग इतने में ही सन्तुष्ट हो जाते हैं कि 'मैं दृष्टा, चेतन, साक्षी हूँ।' किन्तु इसमें परिच्छिन्नता का भ्रम मिटा नहीं है। यदि साधक स्वस्वरूप को जानने से पूर्व ही श्रवण, मनन, निदिध्यासन छोड़ दे, ईश्वर के प्रति भक्ति छोड़ दे अथवा समाधि से पूर्व योगाभ्यास छोड़ दे, अंतःकरण की शुद्धि से पूर्व धर्म छोड़ दे तो यह तो ऐसा हुआ जैसे कोई लाभ होने से पूर्व व्यापार बंद कर दे। सिद्धावस्था की प्राप्ति से पूर्व साधना नहीं छोड़नी चाहिये।

साधन करने लगे तो बलपूर्वक उससे हटाने गिरानेवाले बड़े-बड़े विघ्न सामने आते हैं। अभ्यास-काल में ज्वर आ गया, जुकाम हो गया, भूख लगती है कभी प्यास, कभी काम का वेग आता है कभी क्रोध का वेग आता है, कभी प्रशंसा प्रमत्त कर देती है, कभी निंदा क्षुब्ध कर देती है, कभी चुप्पी का वेग

आता है तो कभी बोलने का । ये सब विघ्न हैं । अभ्यास करते रहने पर ये विघ्न दूर हो जाते हैं । अनेक प्रकार के अभिमान भी बनते हैं और वे सब विघ्नरूप है । जैसे, 'हमें इतने उत्तम गुरु मिल गये कि अब तो वे ही हमारा उद्धार कर देंगे ।' चाहिये तो यह कि 'गुरु उत्तम मिले तो भजन अधिक करें जिससे उनके योग्य शिष्य कहे जा सकें ।'

'हम तो अब काशी-धाम में आ गये तो भजन करने की क्या आवश्यकता ?' अरे भाई, काशी में भजन करने से तो वह और अधिक चमकेगा । इस प्रकार कभी कोई अहंकार विघ्न बन जाता है तो कभी कोई । कभी कुछ सिद्धि मिल गई या किसी देवता का दर्शन हो गया, कोई प्रकाश ही चमक गया तो बस, भजन-चिन्तन छूट गया । अतः साधक को धैर्य के साथ ध्यान-भजन करते रहना चाहिये ।

श्री उडिया बाबाजी महाराज रामघाट में गंगाजी के किनारे ऊँचे कगार पर भजन करने बैठे थे । मन में बार-बार विचार आने लगा कि : 'घर छोड़ा, परिवार छोड़ा, प्रदेश छोड़ा, सिद्धियाँ छोड़ दीं, किन्तु स्वरूप का साक्षात्कार हो नहीं रहा है । यह शरीर निकम्मा है । अब इस शरीर को बनाये रखकर क्या होगा ?' बार-बार गंगाजी में कूद जाने की बात मन में आवे । फिर एक शिवमंदिर में बैठ गये । शंकरजी से प्रार्थनाएँ करने लगे, किन्तु भगवान शिव कुछ नहीं बोले । तब शंकरजी पर बड़ा क्रोध आया और शिवलिंग पर आघात किया । भगवान आशुतोष प्रकट हो गये और बोले :

नेति नेतीति वाक्येन शेषितं यत्परं पदम् ।
निराकर्तुमशक्यत्वात्तदस्मीति सुखी भव ॥

'नेति नेति' इस वाक्य से निषेध करते जाओ । अंत में जो निषेध करनेवाला है वह शेष रह जायेगा । उसका निषेध करना अशक्य है । वही परमपद है । 'वहाँ मैं हूँ' यह जानकर सुखी हो जाओ ।

मैं एक बार रामघाट गया । गर्मी के दिन थे । धूल भरी लू चल रही थी । मंदिर के पुजारी के चले जाने पर ठंडे स्थान की दृष्टि से मैं मंदिर में चला गया और भीतर से द्वार बंद कर लिये । तो भगवान शिव ने स्वतः प्रकट होकर दर्शन दिया ।

साधक स्थूल शरीर की अनुकूल प्रतिकूल स्थिति को सहन कर सकता है, किन्तु सूक्ष्म शरीर, अंतःकरण की किसी भी स्थिति को, जो साधन के प्रतिकूल हो, साधक सहन नहीं कर सकता । सूक्ष्म शरीर की किसी भी स्थिति को केवल तत्त्वज्ञ ही सह सकता है, क्योंकि सूक्ष्म शरीर के मिथ्यात्व को समझ लेना साधक के वश की बात नहीं है । अतः समझदार को सावधान होकर विचार करना चाहिये । जो मार्ग जानते हैं उनसे पूछकर चलेंगे तो भटकेंगे नहीं और सीधे पहुँचेंगे । अगर स्वतंत्र खोज करेंगे तो श्रम तथा समय बहुत लगेगा । अतः परमार्थ प्राप्त करना हो तो जिन्होंने उसे प्राप्त किया है उन महापुरुषों से सीखना चाहिये ।

जो परमात्मसाक्षात्कार करके सुखी, शांत और सच्चे अनुभवी बने हैं, उन पर यदि आस्था-श्रद्धा हो, उन पर विश्वास हो तो हम भी उसी मार्ग से वहाँ तक पहुँचने का प्रयत्न करेंगे । यदि उनमें आस्था-श्रद्धा न हो तो जहाँ हैं, वहीं रहेंगे, अतः श्वेताश्वतरोपनिषद् कहती है :

यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

*( स्वामी श्री अखण्डानन्द सरस्वती के 'अपरोक्षानुभूति प्रवचन में से )*

# दधीचि ऋषि

दैत्यों ने सोचा कि देवताओं ने अस्त्र-शस्त्र कहाँ रखे होंगे ? उन्होंने खूब जाँच करवायी । खोज करते-करते उन्हें पता चला कि देवता लोग बिना स्वार्थ के किसीके पास जानेवाले नहीं हैं और वे दधीचि ऋषि के पास गये थे । दधीचि ऋषि के प्रभाव को हम भी जानते हैं । ऐसे महातेजस्वी दधीचि ऋषि के आश्रम में ही उन्होंने अस्त्र-शस्त्र रखे होंगे । दैत्यों में खलबली मच गयी । उन्होंने विचार किया कि दधीचि ऋषि के पास हम शस्त्र माँगने जायेंगे तो हमको देंगे नहीं और यदि हम जोर-जबरदस्ती करेंगे तो भी काम नहीं बनेगा । दैत्य दधीचि ऋषि के योगबल को जानते थे, उनकी समता को जानते थे ।

दैत्यों में खलबली मच गयी और यह बात घूमते-घामते दधीचि ऋषि के कानों तक पहुँची ।

**ज्ञान बड़ी रक्षा करता है, सहायता करता है । जहाँ अस्त्र-शस्त्र भी काम नहीं देते, संगी-साथी भी काम नहीं आते वहाँ भी ज्ञान आपकी रक्षा करता है ।**

मूर्ख व्यक्ति या तामसी व्यक्ति चुप बैठने में नहीं मानते । चूहा किराने की दुकान में घुसे या घर में, वह चुप नहीं बैठेगा । गुड़ की डली मिले या हल्दी की, ले ही भागेगा । ऐसे ही तमोगुणी व रजोगुणी आदमी भी कहीं चुप नहीं बैठता ।

इसीलिए भागवत का श्लोक कहता है - "सात्त्विक गुणों के श्रवण से, सात्त्विक वस्तुओं के सेवन से और साधु पुरुषों के अनुसरण से सात्त्विक वृत्ति उत्पन्न होती है । सात्त्विक वृत्ति उत्पन्न हुए बिना व्यक्ति चैन से नहीं बैठ सकता ।"

दधीचि ऋषि की पत्नी ने कहा : "नाथ ! मैंने तो पहले ही प्रार्थना की थी । आपने नाहक ही झगड़े के मूल को अपने आश्रम में रखा ।"

तब ऋषि को भी हुआ कि देवता लोग बड़े चालाक हैं, अनुनय-विनय करके यह मुसीबत यहाँ छोड़कर चले गये हैं । अब असुरों से कैसे छुटें ।

बार-बार जब किसी ऐहिक वस्तु का चिंतन होता है तो फिर ब्रह्मचिन्तन छूट जाता है । जब असत् वस्तु का, असत् व्यवहार का ज्यादा चिंतन करते हैं तो चित्त की विश्रांति में खलल पड़ता है । अब ऋषि को शस्त्रों का चिन्तन ज्यादा होने लगा । ध्यान में बैठते तब भी शस्त्रों का चिंतन ! रात्रि को नींद के वक्त भी शस्त्रचिंतन क्योंकि देवता लोग धरोहर छोड़ गये थे, अमानत छोड़ गये थे ।

किसीकी अमानत अन्य को दे देना यह तो कायरों का काम है और अमानत नहीं देंगे तो असुर चुप भी नहीं बैठेंगे । अमानत का क्या किया जाये ? यह सोचते-सोचते उनकी चिंता बढ़ गयी । लेकिन फिर ऋषि को विचार आया कि यह चिन्ता असत् वस्तु को सत् मानने से ही हो रही है, असत्, जड़, दुःखरूप संसार को सत् मानने से ही चिन्ता लग रही है । (क्रमशः)

शरीर जितना निरोग, सुन्दर, स्वच्छ व पवित्र रहेगा, उतना ही आत्मा का प्रकाश इसमें अधिक प्रकाशित होगा । यदि दर्पण ही ठीक न होगा तो प्रतिबिम्ब कैसे दिखाई देगा ? यदि नींव ही कमजोर है तो इमारत कैसे बुलन्द होगी ? शास्त्रों में आता है :

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

शरीर सब कर्मों का मुख्य साधन है । शरीर एक मंदिर है जिसमें आत्मा का पूर्ण विकास हो सकता है । आइये, हम यहाँ भारतवर्ष के ऋजुरात्मन् तपोमूर्ति ब्रह्मनिष्ठ योगीराज सत्पुरुष संत श्री आसारामजी महाराज द्वारा उपदिष्ट शरीर-स्वास्थ्य संबंधी कुछ हितकारी उपायों का पाठन कर अपने जीवन में उन्हें आत्मसात् कर स्वास्थ्यलाभ लेवें :

शरीर की स्वस्थता के लिए हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा खोज किये गये आसनों से शरीर को भरपूर व्यायाम मिलता है, जो कि शरीर के सौष्ठव व सक्रियता के लिए अनिवार्य तत्त्व है । अतः अपनी प्रकृति के अनुसार प्रतिदिन आठ-दस प्रकार के आसन अवश्य करने चाहिए ।

ठण्ड, हवा, वर्षा, धूप से सदैव परहेज न करें अपितु सप्ताह में एकाध बार, मौसम के अनुसार, कुछ मिनटों के लिए ही सही, इन तत्त्वों को अवश्य ही सहन करें ताकि शरीर में इन तत्त्वों की प्रतिकारक क्षमता विकसित हो तथा अकस्मात् कभी कहीं इनका कुछ देर सामना करना पड़े तो शरीर पर उसका कोई कुप्रभाव न पड़े । सृष्टि का यह स्पर्श आपको तेजस्विता प्रदान करेगा ।

आटे को छानकर उसका चापड़ा (चोकर) फेंकें नहीं अपितु उसे आटे में मिलाकर रोटी बनायें, क्योंकि उसमें अनेक पौष्टिक तत्त्वों का समावेश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक लाभप्रद होते हैं । इसी प्रकार चावल पकाया हुआ पानी (मांड) भी नहीं फेंकना चाहिए । वह भी अत्यधिक पुष्टिकर होता है । बेहतर है कि चावल को इतने ही पानी में पकाया जाय कि पानी फेंकना ही न पड़े । मशीनों से कूटकर निकाले गये सफेद चावलों की अपेक्षा घर पर तैयार किये गये चावल अधिक पुष्टिकर व स्वास्थ्य प्रदायक होते हैं ।

कई लोग अनाज पिसवाकर एक-एक महीने का आटा स्टॉक कर लेते हैं अथवा तो पीसा हुआ आटा खरीद कर ले आते हैं जिससे उसके बहुत सारे पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं । यही कारण है कि आजकल के लोगों का शरीर मात्र हड्डियों का ढाँचा ही रह गया है तथा पचास की उम्र पार करने के पहले ही वे अनेक रोगों के शिकार बने रहते हैं । जबकि पुराने लोग आज भी नई पीढ़ी की अपेक्षा कई गुना अधिक स्वस्थ, तंदुरुस्त व दीर्घायु होकर प्रसन्नचित्त रहते हैं, इसका मुख्य कारण है कि उन्होंने सदैव अपने खानपान के प्रति सजगता रखी है ।

एक सप्ताह से अधिक समय का पड़ा हुआ आटा अनेक विटामिनों से रहित हो जाता है । इसी कारण पुराने घरों में घंट्टियाँ (हस्तचलित चक्की) रखी जाती थी, जिनसे प्रतिदिन महिलाएँ ब्राह्ममुहूर्त में ही अनाज पीसकर ताजा आटा तैयार करती थी । इससे दो प्रकार के लाभ होते थे : एक तो महिलाओं का व्यायाम हो जाता था तथा दूसरा, ब्राह्ममुहूर्त में तैयार किया गया आटा चन्द्रकिरणों से इस काल में बरसने वाली अमृत बून्दों से युक्त होकर अत्यधिक बल व प्रसन्नता-वर्धक होता था ।

अनाज पीसने के तुरन्त ही बाद आटा किसी साफ कपड़े पर फैलाकर ठंडा कर लेना चाहिए क्योंकि विद्युतशक्ति से द्रुतगति से चलने वाली चक्कियों में आटा गरम होकर निकलता है । वैसे तो अनाज के अनेक पोषक तत्त्व इन विद्युतीय चक्कियों में जलकर

नष्ट हो जाते हैं । यदि आटा ठण्डा न किया जावे तो उसके बहुत सारे पोषक तत्त्व आटे के डिब्बे में जलकर नष्ट हो जाते हैं । आजकल पावडर का अथवा सार तत्त्व निकाला हुआ या गाढ़ा माना जानेवाला भैंस का दूध पीने का फैशन चल पड़ा है इसीलिए लोगों की बुद्धि भी भैंसबुद्धि बने जा रही है । शास्त्रों ने व वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि गाय का दूध तो अमृत के समान होता है व अनेक रोगों का स्वतः सिद्ध उपचार भी माना जाता है । गाय का दूध सेवन करने से किशोर-किशोरियों की उचित मात्रा में शरीर की लम्बाई व पुष्टता विकसित होती है, हड्डियाँ भी मजबूत बनती हैं एवं बुद्धि का विलक्षण विकास होता है । आयुर्वेद में शहद दूध में डालकर पीना विपरीत आहार माना गया है अतः दूध में शहद नहीं डालना चाहिए ।

सप्ताह में एक दिन उपवास अवश्य करें । इससे जठराग्नि तीव्र प्रदीप्त होती है व शरीरशुद्धि होती है । जो लोग उपवास के दिन ठूँस-ठूँसकर साबुदाने की खिचड़ी अथवा अन्य तला-गला मिर्च मसालेयुक्त आहार को फलाहार का नाम देकर खाते हैं उनसे अनुरोध है कि वे उपवास न करें तो ही अच्छा है क्योंकि इससे 'उपवास' जैसे पवित्र शब्द की तो बदनामी होती है, साथ ही साथ शरीर को और अधिक नुकसान पहुँचता है ।

फलाहार का तात्पर्य उस दिन आहार में सिर्फ कुछ फलों का सेवन करने से है लेकिन आज इसका अर्थ बदलकर फलाहार में से अपभ्रंश होकर फरियाल बन गया है, और इस फरियाल में लोग भोजन से भी अधिक भारी, गरिष्ठ, चिकना, तला-गुला व मिर्च मसलोंयुक्त आहार का सेवन करने लगे हैं । लोगों के इस अविवेकपूर्ण कृत्य से लाभ के बदले उन्हें हानि ही हो रही है ।

कई लोग नाश्ते के रूप में अथवा भूख मिटाने के लिए होटलों और बाजारों में खुले रूप से बिकनेवाले चिवड़े, चटपटे चाट, पकोड़े आदि अन्यान्य खाद्य पदार्थों का हमेशा ही सेवन करते रहते हैं, जो कि स्वास्थ्य और विशेषकर पाचनशक्ति के लिए अत्यधिक हानिकारक होता है । अनेक स्थानों पर खाद्य सामग्रियों को खुला ही रखते हैं जिस पर मक्खियाँ व अन्य जीवाणु आदि बैठकर गंदगी फैलाते हैं तथा हवा में तैरते गन्दे कण भी उन आहारों पर चिपकते हैं और वही गंदगी हमारे शरीर में प्रवेशकर अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देती है अतः कम से कम अपनी स्वादेन्द्रिय पर इतना संयम तो अवश्य रखो कि खाद्य वस्तुएँ खुली रखनेवालों, नकली अथवा मिलावटयुक्त दूषित खाद्य पदार्थ बेचनेवालों के यहाँ से खाद्य वस्तुएँ न लेवें अन्यथा यही स्वादलोलुपता एक दिन भयानक रोगों की जननी बनेगी ।

चाँदी के बर्क लगी मिठाइयाँ पवित्रता की दृष्टि से साधकों को नहीं लेनी चाहिए क्योंकि बर्क बनाने में बैलों की आँतों का उपयोग किया जाता है ।

> चाँदी के बर्क लगी मिठाइयाँ पवित्रता की दृष्टि से साधकों को नहीं लेनी चाहिए क्योंकि बर्क बनाने में बैलों की आँतों का उपयोग किया जाता है ।

बौद्धिक कार्य व साधन भजन में आगे बढ़नेवालों के लिए प्याज न खाना ठीक ही कहा गया है । किन्तु जो शारीरिक श्रम अधिक करते हैं उनके लिए तो प्याज शक्तिवर्धक है । स्वास्थ्य के लिये सभी ने कच्ची हरी सब्जियाँ, टमाटर, पालक, मैथी आदि भी कुछ मात्रा में कचुम्बर अथवा सलाद बनाकर खाना चाहिए ।

अदरक और नींबू की भोजन में अनिवार्य आवश्यकता बतलाई गई है । भोजन के पूर्व अदरक के छोटे-से टुकड़े पर नमक व नींबू का रस लगाकर खाने से जठराग्नि प्रबल होती है तथा सब्जी में नींबू का रस डालकर खाने से नींबू के रासायनिक तत्त्व भोजन को पचाने में अत्यधिक सहायता प्रदन करते

हैं । प्रतिदिन भोजन के साथ इन दोनों पदार्थों का सेवन भोजन के संपूर्ण सार तत्त्वों को शरीर की पुष्टता के लिए निचोड़ने में आंतरिक अंगों को सहाय करता है । अतः भोजन में नींबू व अदरक अवश्य लेना चाहिए ।

भोजन भी हल्का हो, सुपाच्य हो, सादा एवं सात्त्विक हो, ठोस की जगह लचीला अथवा रसयुक्त हो, कम से कम मिर्च-मसाला, नमक व शक्करवाला हो तथा शुद्ध शाकाहारी हो, वही भोजन उत्तम माना जाता है । दीर्घायु व आरोग्यता प्राप्ति के लिये ऐसा ही भोजन करना चाहिए ।

जब दाँया स्वर चलता हो तब भोजन करना अमृत तुल्य माना गया है तथा बाँया स्वर चले तब पानी पीना अमृत तुल्य माना गया है ।

दोपहर के भोजन के पश्चात् कुछ कदम चलकर दस-पन्द्रह मिनट तक बाँयी करवट लेटकर आराम कर लें ताकि भोजन पच सके लेकिन नींद न लें । भोजनोपरान्त दिन को नींद लेने से व्यर्थ की स्थूलता व आलस्य की वृद्धि होती है । रात्रि के भोजन के बाद आधा घण्टा टहलने से कब्जियत अथवा अनिद्रा की शिकायत नहीं रहती व पेट भी साफ उतरता है ऐसा कहा गया है ।

स्वास्थ्य की रक्षा, त्वचा के सौन्दर्य एवं शारीरिक सौष्ठवता के लिये सप्ताह में एक या दो बार सरसों, बादाम अथवा अन्य किसी गुणकारी तेल की शरीर पर मालिश करनी चाहिये । मालिश द्वारा रोमकूपों से तेल शरीर के भीतर पहुँचकर विभिन्न अवयवों को शक्ति प्रदान करता हुआ उन्हें अधिक क्रियाशील करता है । मालिश से वृद्धत्व भी दूर होता है तथा त्वचा में अनोखी कांति निखर आती है । नींबू के रस को रगड़ने से भी रोमकूप खुलते हैं व त्वचा की चिकनाहट एवं चेहरे का सौन्दर्य बढ़ता है ।

इनके अतिरिक्त जीवन में संयम, जप, ध्यान, प्राणायाम, प्रातःकाल भ्रमण, उषःपान अर्थात् प्रातःकाल जलसेवन आदि का नियमित सहारा लेते हुए हमें अहर्निश अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग बने रहना चाहिए ।

जो लोग भोजन के बाद तम्बाकू या सुपारी या और कोई पान-मसाला खाते हैं उन सज्जनों को पान मसालों से कितनी हानि होती है एवं हरड़े से कितना लाभ होता है इसका पता ही नहीं । भोजन के बाद हरड़े अवश्य खानी चाहिए ।

राजनैतिक गतिविधियों में जीवन बितानेवाले, अनेक सामाजिक संस्थाओं की जिम्मेदारी निभानेवाले, संघर्षमय जीवन जीते हुए, अनेक बार विधायक बने, भूतपूर्व नशाबंदी विभाग (गुजरात राज्य) के मंत्री व इस समय सांसद का पदभार सम्हालने वाले श्री हरिसिंहजी चावड़ा ने एक बार पूज्यश्री को बताया कि : "बापू ! मैं विगत १२-१५ वर्षों से आपके पास आ रहा हूँ और आप मुझे वैसे का वैसा ही देख रहे हैं । मुझे अभी तक कोई रोग छुआ ही नहीं क्योंकि मैं पिछले तीस वर्षों से प्रतिदिन नियमित रूप से हरड़े लेता हूँ ।"

पू. बापू ने उन्हें बताया कि इसीलिए हरड़े को आयुर्वेद में धात्री अर्थात् दूसरी माता कहा है ।

❀

# सिरदर्द का इलाज

जब कभी बहुत थके हुए हों तो जीभ को जरा-सा बाहर निकालकर, तर्जनी ऊँगली को अंगूठे से दबाकर '०' शून्याकार कर कुछ देर आराम करें । इससे ज्ञानतंतुओं को पोषण मिलता है और थकान मिटती है ।

इसी प्रकार जिसका सिर बहुत दुःखता हो वह भी दाँतों से जीभ को थोड़ा-सा बाहर निकालकर, तर्जनी ऊँगली (अंगूठे के पास वाली) को अंगूठे से दबाकर '०' बनाकर दिन में तीन बार दो-दो मिनट किया जाए । उससे कितने ही प्रकार के दर्द मिट जाते हैं ।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

# युवाओं के लिये स्वर्णिम अवसर

देश व समाज की आध्यात्मिक सेवा करने वाले ऐसे नवयुवक, जो कि भारत के कोने-कोने में भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म तथा वेद-वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के अभिलाषी हों, वे कृपया नीचे लिखे कॉलमों की पूर्ति कर शीघ्र ही अपनी विस्तृत जानकारी भेजें । आयु सीमा १६ से ३० वर्ष ।

योग्य होने पर आपको विस्तृत पूछताछ के लिये आमंत्रित किया जाएगा तथा चयन हो जाने पर आपको पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का एक माह का प्रत्यक्ष सान्निध्य एवं साधना का स्वर्णिम सुअवसर मिलेगा, जिसमें योगिक प्रयोगों द्वारा तन तन्दुरुस्त, मन प्रसन्न व बुद्धि का विलक्षण विकास कर देश व समाज की सेवा का सामर्थ्य विकसित कर सकेंगे । अपनी निम्न जानकारी शीघ्र भेजें ।

(१) पूरा नाम, उपनाम सहित
(२) पत्रव्यवहार का पता (३) फोन नंबर
(४) जन्मतिथि (प्रमाणित)
(५) शैक्षणिक योग्यता (मय प्रमाण के)
(६) वर्त्तमान प्रवृत्ति (७) मूल निवासी
(८) मंत्रदीक्षा ली है ? यदि हाँ तो कब व कहाँ ?
(९) कितने ध्यान योग शिविर भरे हैं ?
(१०) अन्य किसी प्रकार की साधना की हो तो विवरण
(११) अन्य योग्यताएँ व अभिरुचियाँ....
(१२) संक्षेपमें परिवार के सदस्यों की जानकारी ...
(१३) परिवार में आप किस नंबर के सदस्य हैं ?
(१४) पारिवारिक व्यवसाय
(१५) यदि किसी रोग से ग्रस्त हैं तो उसका नाम

मैं ........................................................ शपथपूर्वक कहता हूँ कि क्र. १ से १५ तक के कॉलमों में दर्शायी गई समस्त जानकारी सत्य है ।

दिनांक : .................. हस्ताक्षर : ..................

नोट : उपरोक्त आवेदन की साफ-साफ अक्षरों में पूर्ति कर अपने एक फोटो के साथ दिनांक २० फरवरी १९९५ तक यह जानकारी निम्न पते पर भेजें ।

'साधक चयन विभाग'
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५

---

(पृष्ठ २१ का शेष)

एक शास्त्रीजी महाराज थे । वे भागवत की कथा करते थे । थोड़ी ही कथा करते और उनका सिर पकड़ा जाता । उन्होंने सब इलाज किये पर दर्द कम न हुआ । एक बार उन्होंने घाटवाले बाबा से कहा कि : "बाबाजी ! मेरा तो सिर का दर्द जाता ही नहीं ।"

तब घाटवाले बाबा ने उपर्युक्त प्रयोग कुछ दिनों तक करने को कहा । शास्त्रीजी ने यह प्रयोग किया और वे ठीक हो गये ।

ज्यों केले के पात में, पात-पात में पात ।
त्यों संतों की बात में, बात-बात में बात ॥

घाटवाले बाबा ने तो जरा-सी बात बता दी लेकिन शास्त्रीजी का सिरदर्द उस प्रयोग से सदा के लिए मिट गया । संतों की जरा-सी अनुभवयुक्त बात शास्त्रीजी के लिए वरदान सिद्ध हो गई ।

सच्चे गुरु से ज्याद प्यारे, हितकारी, कृपालु और प्रिय व्यक्ति इस दुनिया में बड़ी मुश्किल से मिलेंगे । आत्मवेत्ता गुरु के साथ एक क्षण का सत्संग भी लाखों वर्ष के तप से कई गुना श्रेष्ठ है ।

*- स्वामी श्री शिवानंदजी*

# विश्वदुर्लभ संत : पूज्य बापू

मैं स्विट्ज़रलैंड में विन्टरटूर शहर की रहने वाली हूँ। वहाँ मेरे पिता का निजी होटल व्यवसाय है। सत्तर लाख अमेरिकी डालरों से निर्मित उस होटल का सारा मैनेजमेंट मैं ही करती थी। 'होटल वार्टमेन' के नाम से हमारा यह होटल विन्टरटूर शहर में शराब व कबाब की पार्टी के लिये अत्यधिक प्रसिद्ध है, जिसमें हम लोगों ने करोड़ों रूपया कमाया है।

प्रतिदिन रात्रि के तीन बजे तक होटल में ड्यूटी देने के बाद सुबह के पाँच बजे तक दो घंटा अपने मित्रों के साथ शराब व सिगरेट के नशे में धुत्त होकर डिस्को करते हुए पाश्चात्य शैली में जीवन का भरपूर आनन्द लेना मेरी दिनचर्या थी। यह सब हमारे देश की सभ्यता का हिस्सा बन चुका है इसलिये मेरे माता-पिता को भी इससे कोई ऐतराज़ न था।

इस तरह भोग-विलास का जीवन यापन करते हुए एक बार मैं अपने ब्वायफ्रेन्ड् रोलेन्ड (जिससे मेरी शादी भी होने वाली थी) के साथ भारत भ्रमण पर आई। रोलेन्ड का अभिन्न मित्र व स्विट्ज़रलैंड के एक प्रसिद्ध उद्योगपति का लड़का मोरिस उन दिनों संत श्री आसारामजी आश्रम, अहमदाबाद में साधक के रूप में रहकर साधना कर रहा था। अतः हम सबसे पहले मोरिस से मिलने अहमदाबाद आये। संयोगवश उसी दिन स्वामीजी अपने सत्संग-प्रवचन हेतु स्विट्ज़रलैंड के लिये प्रस्थान कर चुके थे।

मोरिस ने हमें आश्रम-दर्शन करवाया तथा सत्साहित्य भेंट स्वरूप दिया और हम उससे विदा लेकर भारत-भ्रमण पर गुजरात व राजस्थान के अनेक पर्यटन स्थलों की सैर करते हुए उत्तराखंड पहुँचे, जहाँ जी भरकर हमने भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लिया।

अपनी दो माह की यात्रा समाप्त करने के बाद हम पुनः नवम्बर '८८ में स्वदेश लौटने से पूर्व मोरिस से मिलने अहमदाबाद आये। तब तक संतश्री भी स्विट्ज़रलैंड से लौटकर सूरत आश्रम पधार चुके थे। मोरिस के आग्रहवश हम बापू के दर्शनों के लिये सूरत पहुँचे, जहाँ पूज्यश्री ने अपने सहज स्वभाव से हमें भी खूब प्रसाद लुटाया। मैंने इन महान योगी को भी भारत का एक साधारण साधु समझकर उस समय इनके विराट स्वरूप को न समझ पाने की जो भूल की थी, आज भी कभी-कभी मुझे उसका पश्चात्ताप होता है। मैं भला विकारों से युक्त जीवन जीने वाली स्विस् युवती भारत के इस महान संत की विराटता का मूल्यांकन अपनी नजरों से कर भी कैसे पाती ?

> "मैं जब भी कभी भारत के सूरत शहर में संत श्री आसारामजी बापू के दर्शन-दृश्य का स्मरण करती अथवा उनका अंग्रेजी साहित्य पढ़ती तो मुझे एक अजीब-से आनन्द का अनुभव होने लगता।"

हम मोरिस से विदा लेकर अपने देश पहुँच गये। एक दिन अपने व्यवसाय से निवृत्त होकर प्रातः चार बजै मैंने बैठे-बैठे अचानक ही सिर पर हाथ रखकर आँखें मूँदी तो शायद मेरी अन्तरात्मा जागृत होकर मुझसे ही सवाल करने लगी कि यह भोग, विलास और विकारमय जीवन कब तक जीती रहेगी ? एक

दिन तो सब कुछ यहीं छोड़कर मरना है । उस दिन के बाद मैं जब भी कभी भारत के सूरत शहर में संत श्री आसारामजी बापू के दर्शन-दृश्य का स्मरण करती अथवा मोरिस द्वारा भेंट दिया गया उनका अंग्रेजी साहित्य पढ़ती तो मुझे एक अजीब से आनन्द का अनुभव होने लगता । ऐसा लगता मानो हम जिस तरह से जीवन जी रहे हैं, वह पूर्ण सत्य नहीं, जीवन जीने की कला कुछ और ही है । ऐसे ही कुछ अनुभव मेरे मित्र रोलेन्ड को भी होने लगे । हमें डिस्को करना, शराब व सिगरेट पीना, विकारी जीवन जीना खलने लगा ।

"अपना करोड़ों का व्यवसाय, माता-पिता व मित्र छोड़कर स्थायी रूप से पूज्य बापू की शरण में आकर अनसूया आश्रम में अन्य बहनों के साथ पूज्य माताजी के सान्निध्य में रहते हुए गुरुदेव की कृपा से नित्यप्रति आध्यात्मिक उन्नति का अनुभव कर रही हूँ ।"

हम दोनों, मैं व रोलेन्ड एक वर्ष बाद जनवरी १९९० में भारत आये व अहमदाबाद में पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज से उत्तरायण शिविर में मंत्रदीक्षा ली । दीक्षा के समय पूज्यश्री की शक्तिपात-वर्षा से हमें जो आनंद व सुख मिला, वह अवर्णनीय है । विकारों से मिलने वाला वह क्षणिक सुख इस शाश्वत व चिरस्थायी, भारतीय संस्कृति के सनातन सुख का क्या मुकाबला कर सकता है ?

> "यदि स्वामी श्री आसारामजी बापू जैसा एक भी संयमी, सदाचारी, पवित्रात्मा, मुक्तात्मा संत हमारे ईसाई देशों में पैदा हो जाए तो वहाँ के लोग सारी दुनिया पर ईसाइयत का साम्राज्य फैला दें ।"

उसके बाद से मैं व मेरा मित्र हर दूसरे-तीसरे महीने भारत में आकर पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य व मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे। हमारे डिस्को, शराब, माँसाहार व सिगरेट की सारी बुरी आदतें छूट गईं तथा भोगप्रधान देश में भी हम ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए संयम तथा सदाचारयुक्त जीवन यापन करने लगे ।

ईसाई धर्म का अनुयायी होते हुए भी मेरा मन बार-बार भारत के ऋषि-मुनियों व शास्त्रों द्वारा वर्णित उस परम पद की प्राप्ति हेतु तड़पने लगा जिसे पाकर जीवन की तमाम साधनाएँ, तमाम यात्राएँ पूरी हो जाती हैं, जिसे प्राप्त करने के बाद ब्रह्माजी का पद भी छोटा लगने लगता है तो इन्द्र पद की बिसात ही क्या ... ? देवदुर्लभ इस परम पद 'आत्म-साक्षात्कार' में स्थिति के बाद जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि आदि के समस्त दुःख दूर हो जाते हैं, ऐसे पद में स्थिति पाने की मेरी तड़प बढ़ती गई । मैंने अपने होटल में शाकाहारी भोजन की व्यवस्था भी आरम्भ की लेकिन मेरा मन अब उस व्यवसाय से विरक्त होने लगा और जनवरी '९१ में मैं स्टूडेन्ट वीज़ा लेकर अपना करोड़ों का व्यवसाय, माता-पिता व मित्र छोड़कर स्थायी रूप से पूज्य बापू की शरण में आकर अनसूया आश्रम में अन्य बहनों के साथ पूज्य माताजी के सान्निध्य में रहते हुए गुरुदेव की कृपा से नित्यप्रति आध्यात्मिक उन्नति का अनुभव कर रही हूँ । मुझे भूल से भी अब कभी अपने बीते हुए विकारी जीवन की याद नहीं आती है । मैं अब हिन्दी भाषा भी बहुत कुछ मात्रा में सीख गई हूँ ।

भारत में आज जब कभी कहीं स्वामीजी की निन्दा या विरोध की बातें सुनती हूँ तो मुझे भारत के लोगों के मानसिक दिवालियापन पर तरस आने लगता है । जिस आध्यात्मिक धन की खोज में मुझे अपना वतन छोड़कर भारत में रहना पड़ रहा है, वह अमर धन भारतवासी क्यों खो रहे हैं ? पूरे

यूरोप खंड में कहीं भी मुझे पूज्य बापू जैसा अन्य कोई संत देखने या सुनने को न मिला। स्वामीजी ने कभी भी हमसे धर्मपरिवर्तन के लिये भी न कहा। वह भारतभूमि धन्य है जिसकी गोद में संत श्री आसारामजी महाराज जैसे महापुरुष अवतरित, पल्लवित व पुष्पित हुए हैं। इस देश व पूज्य बापू के उपकारों को मैं कभी न भूला पाऊँगी जिसने मुझे जीवन जीने की सच्ची कला सिखाई। सारी संस्कृतियों के नष्ट हो जाने के बाद भी भारतीय संस्कृति की विश्वव्यापी लोकप्रियता का कारण पूज्य बापू जैसे महान संत ही हैं।

मैं सच कहती हूँ कि यदि स्वामी श्री आसारामजी बापू जैसा एक भी संयमी, सदाचारी, पवित्रात्मा, मुक्तात्मा संत हमारे ईसाई देशों में पैदा हो जाए तो वहाँ के लोग सारी दुनिया पर ईसाइयत का साम्राज्य फैला दें। मेरे शब्द बहुत फीके हैं। मैं अपने सद्गुरु व इस महान भारत देश का कैसे शुक्रिया अदा करूँ, जिन्होंने मुझे सत्य व परम कल्याण का मार्ग दिखा दिया, मेरे काम को राम में बदल दिया। वे लोग कितने भाग्यशाली हैं जिन्हें ऐसे परम दयालु सद्गुरु का सान्निध्य मिला है!

*- उर्सुला वार्टमेन*

*होटल वार्टमेन, ८४००, विन्टरटूर, स्वीट्ज़रलैंड।*

*(वर्तमान में महिला आश्रम में)*

❀

# जीवनदाता गुरुदेव ने मेरे भाई को जीवनदान दिया

दिनांक : १५-६-९४ के दिन हमारे खेत के कुँए पर एक दुर्घटना घटी। बारिश का मौसम शुरू हो गया था। ४-५ दिनों से लगातार वर्षा हो रही थी।

मेरे दो छोटे भाई २५ वर्षीय दिनेश एवं २२ वर्षीय ओमकार हमारे खेत के कुँए से पम्प बाहर निकालने के लिये गये थे। दो नौकर भी साथ में थे। सबसे पहले ओमकार पम्प खोलने के औजार लेकर कुँए में उतरा। कुँए के ठीक ऊपर कमरा बना हुआ था इससे कुँआ ऊपर से बन्द हो गया था।

ओमकार कुँए में जाकर फिर तुरन्त वापस बाहर निकल आया और बोला :

"दिनेश भैया! मुझे अन्दर स्वास लेने में परेशानी हो रही है। कुँए में कोई अलग प्रकार की हानिकारक गैस बन गई है।"

ऐसी जहरीली गैस वजन में हवा से भारी होती है अतः ऊँचे नहीं जाती, नीचे ही रहती है।

दिनेश ने नौकर नारायण को समझाते हुए कहा कि तुम कुँए में उतरकर पम्प खोलो और स्वास लेने में जैसे ही परेशानी महसूस हो, तुरन्त बाहर आ जाना। नौकर जैसे ही अन्दर उतरा और पम्प खोलने लगा कि तुरन्त उसकी हालत बिगड़ने लगी। कुछ ही क्षणों में वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा। यह देखकर दोनों भाई स्तब्ध हो गये। नौकर नारायण की रक्षा करने के लिए पू. गुरुदेव का नामस्मरण करने लगे। ओमकार से रहा न गया। 'हे गुरुदेव! हे मेरे प्रभु! हे मेरे साईं! आप नारायण की रक्षा करना.....' ऐसा कहते हुए वह नारायण को रस्से से बाँधने के लिए भीतर उतरा ताकि उसे बाहर निकाला जा सके। नारायण को तो उसने बाँध दिया लेकिन अब खुद भी बेहोश होने लगा। 'ॐ....बापू....ॐ....बापू... अब केवल आप ही तारणहार हैं प्रभु....!' ऐसा अस्पष्ट उच्चारण करते हुए ओमकार वहीं ढेर हो गया।

अब दिनेश के पाँवों के नीचे से धरती मानो सरकने लगी। उसे दोनों दम तोड़ते दिखने लगे। वह हक्का-बक्का-सा हो गया। जोर-शोर से चिल्लानेरोने लगा। आवाज सुनकर नारायण का भाई वहाँ आ गया। दोनों ने मिलकर रस्से में बँधे हुए नारायण को ऊपर खींच लिया। फिर ओमकार को बाँधने के लिए नारायण का भाई नीचे उतरा तो वह भी बेहोश होकर ढेर हो गया।

चिल्लाने की आवाजें सुनकर लोग इकट्ठे हो गये । गाँव में मुझे सूचना मिलते ही मैं कुँए पर पहुँच गया । एक घण्टा बीत चुका था और भीतरी दृश्य देखकर लोग बोल रहे थे कि दोनों में अब जान नहीं रही । यह सब देख-सुनकर मैं पागल-सा हो गया । अपने भाग्य को कोसता हुआ निराश होकर रोने लगा । अत्यंत करुण हृदय से पूज्यश्री को पुकारते हुए कहने लगा : "हे गुरुदेव ! अगर मैंने सच्चे हृदय से आपकी सेवा-पूजा की हो तो आज मेरे भाई को एवं साथी को बचा लो, प्रभु ! आपके सिवाय हमारा कोई नहीं, बापू ! अगर ये लोग नहीं बचे तो मैं....."

मेरा गला रुँध गया । आँखों से आँसू बहने लगे ।

मेरे प्यारे गुरुदेव ने तुरन्त मेरी पुकार सुन ली । अचानक कुँए से उन दोनों के कराहने की आवाज सुनाई दी । भीड़ में से भानालाल नामक एक नवजवान को सत्प्रेरणा हुई और वह साहस जुटाकर उन दोनों को बाँधने के लिए कुँए में उतर गया । इस साहस के दौरान वह खुद भी एक बार बेहोश हो गया था लेकिन पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से आखिरकार सब को सुरक्षित बाहर निकाला गया और कुछ उपचार के बाद सब स्वस्थ हो गये ।

सभी शिष्य रक्षा पाते हैं<br>
सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं ।<br>
सचमुच गुरु हैं दीन दयाल<br>
सहज ही कर देते हैं निहाल ॥

अगर उस दिन करुणासागर गुरुदेव ने मेरी पुकार न सुनी होती तो हमारे परिवार का यह दीपक हमेशा हमेशा के लिए बुझ गया होता । लेकिन जीवनदाता गुरुदेव ने मेरे भाई की जान बचाकर उनके श्रीचरणों में मेरी श्रद्धा-भक्ति को और भी मजबूत कर दिया है । समस्त गोस्वामी परिवार उनके श्रीचरणों में कोटिशः प्रणाम करते हुए गदगद हो रहा है....

*- देवगिरि गोस्वामी*<br>
*अमझेरा, जि धार, मध्य प्रदेश ।*

❀

# पू. बापू की असीम कृपा

आज से सवा साल पहले जब पू. बापू बुधेल आश्रम (भावनगर) में आये थे तब हम दोनों ने दीक्षा ली थी । उसके पश्चात् गुरुदेव पर असीम श्रद्धा रखकर रोज पूजा-पाठ करते और आनंद से दिन गुजारते थे ।

सर्दी के दिनों में मुझे नाक में मसा हो गया जिससे स्वास लेना मेरे लिए इतना कष्टप्रद हो गया कि एक महीने तक मैंने मुख से स्वास लिया । भावनगर के प्रख्यात डॉ. शिवानंद झा के पास जाकर दो बार मैंने दवा ली । उसके पश्चात् भी उन्होंने यही कहा कि आपको ऑपरेशन करवाना ही पड़ेगा । उसी समय सूरत आश्रम में होली शिविर का आयोजन हुआ । वहाँ हम दोनों का जाने का तय हुआ परन्तु मेरे स्वास की तकलीफ के कारण मेरे पति अकेले ही गये । उन्होंने वड़दादा की परिक्रमा करते हुए यह संकल्प किया कि अगर मेरी पत्नी का मसा बिना ऑपरेशन के मिट जाएगा तो मैं वड़दादा की १०८ परिक्रमा करूँगा । उसी समय यहाँ भावनगर में पूजा करते हुए मैंने भी संकल्प किया कि अगर मेरा मसा बिना ऑपरेशन के मिट जाएगा तो मैं वड़दादा की परिक्रमा करते करते गुरुमंत्र की १०८ माला करूँगी । मेरी और मेरे पति की बात पू. बापू ने अंदर से सुन ली और चार दिन के बाद मेरे पति भावनगर वापस आये तब तक मेरा मसा बिना दवाई किये ही कहाँ चला गया, मुझे आज तक पता नहीं लगा । सद्गुरु की ऐसी असीम कृपा है! उनके श्रीचरणों में मेरे लाख-लाख वन्दन हैं ।

२५ मई को हम दोनों ने अहमदाबाद के आश्रम में वड़दादा की परिक्रमा की और पू. बापू के दर्शन का लाभ लिया । *- विमलागौरी बाबुलाल पटेल*<br>
*'मंगल' २३३४, सुभाषनगर, भावनगर ।*

❀

# संस्था समाचार

**विसनगर** : दिनांक ९ से १३ नवम्बर '९८ तक विसनगर (गुजरात) के एम.एन. कालेज ग्राउन्ड पर पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में गीता भागवत सत्संग समारोह का भव्य आयोजन हुआ जिसमें लाखों भक्तों के साथ, राजनेता व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने भी सतत पाँच दिन तक सत्संग सरिता में अवगाहन किया । अपने विसनगर प्रवास के दौरान जिस भूमि पर बनी कुटिया में पूज्यश्री ने पाँच दिन तक निवास कर, पावन बनाकर साधना-समाधि की वह कुटिया विसनगर वासियों एवं आसपास के क्षेत्रों के लिये महा वरदान सिद्ध हुई, जहाँ जनकल्याणार्थ विसनगर समिति ने आश्रम की स्थापना कर प्रति रविवार पूज्य बापू के विडियो सत्संग कार्यक्रम का आरम्भ किया । धन्य हैं वे साधक जो आत्म कल्याण के ऐसे स्थायी केन्द्रों का आरम्भ करते हैं ।

विसनगर में दूर से आये अतिथियों को आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराई थी ।

**पूना** : दिनांक ४ से ८ दिसम्बर तक महाराष्ट्र की पूणे नगरी के बी. जे. मेडिकल कॉलेज ग्राउन्ड पर भारतवर्ष के ब्रह्मर्षि ऋजुरात्मा संत पूज्य गुरुदेव की पीयूषवर्षी वाणीयुक्त दिव्य गीता-भागवत सत्संग समारोह हुआ । पूणे नगरी की ओर से मेयर श्री अली सोमजी एवं पुलिस कमिश्नर श्री मल्होत्रा के साथ अनेक उच्च कोटि के उद्योगपति-व्यावसायी एवं गणमान्यों ने तहेदिल से पूज्यश्री का स्वागत एवं सत्संग-श्रवण किया । दैनिक 'आज का आनंद' के सम्पादक श्री श्याम अग्रवाल तथा प्रसिद्ध बिल्डर श्री मंत्रीजी ने पूज्य गुरुदेव के सुप्रवचनों पर आधारित मराठी पुस्तकों का विमोचन भी किया ।

पूणे नगरी में इतना विशाल व ज्ञानप्रद सत्संग पहली बार देखने व सुनने को मिला । इस अति व्यस्त एवं आधुनिक नगरी में भी प्रतिदिन एक लाख से अधिक लोगों ने सत्संग का लाभ लिया । सत्संग की पूर्णाहुति व गुरुदेव की भावपूर्ण बिदाई के उस अश्रुपूरित दृश्य का तो शब्दों में वर्णन ही नहीं किया जा सकता ।

धन्य है पूणे-पींपरी और आसपास के निवासी जो इस कलिकाल में भी हरिभक्ति के प्रदाता ऐसे आत्मवेत्ता संतों का सान्निध्य प्राप्त कर अपना जीवन विकास के पथ पर ले जा रहे हैं ।

**धरमपुर** : गुजरात के वलसाड़ जिले का यह तहसील मुख्यालय दिनांक १० दिसम्बर को पूज्यश्री के कृपापात्र शिष्य स्वामी सुरेशानंदजी के सत्संग का लाभ लेकर भैरवी आश्रम में एकांतवास पर पधारे पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी का लाभ लेने तड़प उठा । फलतः करुणा की प्रतिमा पूज्य गुरुदेव ने दिनांक ११ व १२ दिसम्बर को वहाँ सत्संग आयोजन की स्वीकृति प्रदान की जिसमें हजारों लोगों ने भाग लेकर अपना जीवन धन्य किया ।

दिनांक १२ दिसम्बर को ही धरमपुर में आदिवासियों के लिये पूज्यश्री के सान्निध्य में विशाल भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें भाविक भक्तों को प्रेम-प्रसाद व दरिद्रनारायणों को दक्षिणा का लाभ मिला । करीब पचास हजार से अधिक आदिवासियों ने इस भंडारे का लाभ लिया । इसी दौरान भैरवी आश्रम पर भी पूज्यश्री के सत्संग का अमृत वितरित होता रहा ।

**बारडोली** : दिनांक १५ से १८ दिसम्बर तक बारडोली को गुरुदेव की जीवनोद्धारक अमृतवाणी का लाभ मिला । बारडोली व आसपास के क्षेत्रों से इतना अधिक जनसमुदाय पूज्यश्री के सुप्रवचनों को

आचमन करने उमड़ा कि डेढ़ लाख लोगों को बैठने के लिये बनाया गया सत्संग-मंडप भी छोटा पड़ गया । पूर्णिमा व्रतधारियों ने भी यहीं पूज्य गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लिया । दिनांक १६ दिसम्बर को गुरुदेव के पावन सान्निय में बारडोली तथा आसपास के हजारों विद्यार्थियों ने स्वस्थता, एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति विकास के विविध योगिक प्रयोग सीखे तथा अपना जीवन उन्नत बने ऐसे प्रेरणादायी प्रेरक प्रसंगों का रसपान किया ।

धन्य हैं वे विद्यार्थी जिनको ऐसे प्राचार्य व शिक्षक मिले जो ऐहिक विद्या के साथ योगविद्या, आत्मविद्या विद्यार्थियों को प्राप्त कराने में सहभागी बने ।

सूरत के निकटस्थ केन्द्रीय सरकार के खाद उत्पादन निगम 'कृभको' में बनाये गये भारत मंदिर में भगवान शिव, राधाकृष्ण, सीता-राम, अन्नपूर्णा व अन्यान्य देवी देवताओं की पवित्र पावन मूर्तियों की अनावरण विधि पू. बापू के करकमलों से सम्पन्न हुई। कृभको निवासी सज्जनों की वर्षों की सत्संग मांग पूर्ण हुई । इस भौतिक युग में बहने वाले लोग भी सत्संग के प्रेमी बने हैं । सचमुच वे धन्य हैं ।

**सूरत :** अब हम आपको वहीं ले चलते हैं जहाँ कल्पवृक्ष और बड़बादशाह की शीतलता, सत्संग की सरिता और हरिनाम की ध्वनि से कण-कण चिन्मय हुआ-सा लगता है । तापी तट पर, विश्रांति देने वाला तीर्थस्थान संत श्री आसारामजी आश्रम में पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में दिनांक २३ से २५ दिसम्बर तक ध्यान योग साधना शिविर एवं २६ से २८ दिसम्बर तक विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर सम्पन्न हुआ । वहाँ हजारों-हजारों दिलों में आत्मशक्ति का संचार करते हुए पूज्यश्री ने जीवन जीने की वास्तविक कला सिखाई एवं इस भीषण कलिकाल में भी हजारों-हजारों को एक साथ ईश्वरीय मार्ग की ओर उन्मुख किया । शक्तिपात के समर्थ आचार्य, अनुभवनिष्ठ संत पूज्यश्री ने ध्यान की गहराइयों में अवगाहन कराके ईश्वरीय कृपा का अनुभव करवाया ।

**श्री योग वेदान्त सेवा समितियों का सेवायज्ञ**

भारत भर में फैली हुई श्री योग वेदान्त सेवा समितियाँ समाज व राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में सुन्दर कार्य कर रही हैं । पूज्यश्री की अमृतवाणी एवं सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार एवं विडियो सत्संग के आयोजन करके ये समितियाँ लाखों-लाखों लोगों को लाभान्वित कर रही हैं ।

*औरंगाबाद समिति (महा.)* द्वारा प्लोट नं. १५, भाग्यनगर में हर गुरुवार को विडियो सत्संग का विशाल आयोजन होता है । तदुपरान्त, विद्यालयों में भी विद्यार्थियों के विकासार्थ इस समिति द्वारा विडियो सत्संग एवं सत्साहित्य-प्रचार-प्रसार होता है । हर शनिवार को खुलताबाद के घृणेश्वर व भद्रमारुति मंदिर में भंडारे का भी आयोजन किया जाता है । औरंगाबाद में १५-२० हजार लोग केबल टी.वी. पर पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी का प्रति सप्ताह लाभ लेते हैं । औरंगाबाद समिति का टेलिफोन नं. २७८७२ व २३१५४ हैं ।

**चंडीगढ़ समिति** द्वारा पंचकुला व चंडीगढ़ में केबल टी.वी. द्वारा पूज्यश्री की अमृतवाणी को अत्यधिक प्रचारित-प्रसारित किया जाता है । वहाँ के निवासी बार-बार पू. बापू की कैसेट्स ही लगाने की माँग करते हैं । चंडीगढ़ में इन दिनों पूज्य बापू के लुधियाना कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार अत्यधिक तीव्रता के साथ चल रहा है । हर दिल को आशा है कि विडियो कैसेट से ही मनमयूर को झुमा देने वाले इन सत्पुरुष पू. बापू के प्रत्यक्ष दर्शन और सत्संग का लाभ देने वाली २२ जनवरी कब आयेगी उसकी चातक की भाँति इंतजार कर रहे हैं ।

ऐसा ही हाल कलकत्तावासियों का भी है जो दिनांक : ७ फरवरी का चातक की भाँति इंतजार कर रहे हैं । कलकत्ता में ७ से १२ फरवरी '९५ से पूज्यश्री का सत्संग समारंभ हो रहा है ।

कलियुग में पैसा व पद के लिये तो चिंतन बहुतेरे करते हैं लेकिन धनभागी हैं वे, जो प्रभु व प्रभु के प्यारे संतों का चिंतन करते हैं । उन आँखों को धन्य है जो संतों का इंतजार करती हैं । प्रभुकथा-श्रवण करने को जिनके कान लालायित रहते हैं व जिनका

दिल भगवतरस में भीगने को उत्सुक रहता है ऐसे भक्तों को प्रणाम हैं...!

**सिरोही** : १९८० के 'अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन' में पूज्यश्री द्वारा की गई सत्संग-सुप्रवचनों की वृष्टि को आज तक सिरोहीवासी अपनी स्मृति में संजोये बैठे हैं। प्रति गुरुवार एवं रविवार को यहाँ सत्संग व कीर्तन का आयोजन किया जाता है जिससे नगरवासियों में जागृति एवं उत्साह की निरन्तर वृद्धि हो रही है।

**कोटा** : विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी श्री योग वेदान्त सेवा समिति ने यहाँके दशहरा मेला में पूज्यश्री के जीवन दर्शन पर आधारित योगलीला प्रदर्शनी एवं विडियो प्रोजेक्टर पर सत्संग का विशाल आयोजन कर नगर निगम, कोटा द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इस प्रदर्शनी में अनेक अधिकारियों, संतों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लेकर संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों की सराहना की।

इसके अतिरिक्त इन्दौर, उज्जैन व देवास में स्वामी सुरेशानंदजी के आतिथ्य में शहर की सड़कों पर विशाल संकीर्तन यात्रा आयोजित की गई जिसमें दूर-दूर से आकर हजारों साधकों ने भाग लिया। इस संकीर्तन यात्रा की भव्यता तीनों शहरों में देखते ही बनती थी।

# पू. बापू के अन्य सत्संग कार्यक्रम

१. प्रकाशा (महा.) में : ५ से ८ जनवरी ९५ सुबह ९-३० से १२ दोपहर ३ से ५ संत श्री आसारामजी आश्रम, केदारेश्वर, (दक्षिण काशी).

२. अहमदाबाद आश्रम में : उत्तरायण शिविर १३ से १५ जनवरी ९५ संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-५. फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

३. लुधियाना में : २२ से २९ जनवरी ९५ सुबह ९ से ११ शाम ४ से ६ भारतनगर चौंक, पंजाबी भवन के पास, लुधियाना. फोन:C/o.५३१७८८, ३७२६७.

४. कलकत्ता में : ७ से १२ फरवरी ९५ सुबह ९-३० से १२-०० दोपहर २ से ४ मुक्तिधाम, मोहन बगान ग्राउन्ड के पीछे, कलकत्ता. फोन : C/o. ३०२४३३, २३९१७३७, २४३४५९५

५. सूरत आश्रम में : होली शिविर १५ से १७ मार्च ९५ संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहांगीरपुरा, सूरत. फोन : ६८५३४१

६. चेटीचंड की शिविर : ३१ मार्च से २ अप्रेल १९९५

(पृष्ठ ३२ का शेष)

वाणी में श्री जेठानन्दजी पूज्यश्री से कहते : "मैं इनका गुरुभाई नहीं, मैं तो अपने भैया के पास आया हूँ।"

अपने अंतिम दिनों में वे बार-बार कहा करते थे कि : "ऐसे महान संत को मैंने 'गुरु' मानने में बहुत देर कर दी। यदि मैं बापू को गुरु मान लेता तो बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर सकता था।"

अस्वस्थ जेठानंदजी को उपचारार्थ चिकित्सालय में भर्ती किया गया था लेकिन मरीज को निचोने वाले अति स्वार्थी लोगों ने बाद में बताया कि हमारी एलोपेथी में लीवर का कोई ठोस उपचार है ही नहीं। काश! वे अतिघृणित स्वार्थ छोड़कर यह पहले ही बता देते तो आयुर्वेदिक औषधियों में लीवर के रोगों के अनेक उपचार हैं, जिनसे उनकी स्वास्थ्यरक्षा की जा सकती थी...

जेठानंदजी ६२ वर्ष की आयु में दिनांक : २८-११-१९९४ को अपनी इस नश्वर देह को त्याग कर स्वर्ग सिधार गये। अपने पीछे वे पत्नी, दो पुत्र व भरा-पूरा परिवार छोड़ गये, जहाँ अब सिर्फ उनकी स्मृतियाँ ही शेष हैं ।

हम सब आश्रमवासी उन्हें अत्यधिक आदर व श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करते हैं कि श्री जेठानन्दजी की सदगत आत्मा को वे परम शांति व मुक्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस भीषण दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

# ❀ श्री जेठानंदजी ❀
# जिनकी अब यादें ही शेष हैं

जीवन क्षणभंगुर है । मृत्यु शाश्वत एवं अकाट्य सत्य है । यह भी परम सत्य है कि मृत्यु आत्मा की नहीं, शरीर की होती है । लेकिन अपने स्नेही, परिजन अथवा सहयोगी के बिछड़ने का, उसकी रिक्तता का दुःखद आभास तो होता ही है ।

ऐसी ही एक अपूरणीय रिक्तता का अनुभव हम श्री जेठानंदजी को खोकर कर रहे हैं । पूज्य बापू जैसे महान संत का जिस कुल में जन्म हुआ, जेठानंदजी उसी कुल में पिता श्री थाऊमल एवं माता मंगीबा की ज्येष्ठ संतान एवं संत श्री आसारामजी महाराज के अग्रज थे ।

अत्यधिक मृदु स्वभावी एवं भोलेभाले, सरल व सादगी के धनी श्री जेठानंदजी सदैव बड़े भाई होने के बाद भी पूज्यश्री में अटूट श्रद्धा एवं अनुशासित आदरभाव रखते थे ।

श्री जेठानंदजी प्रायः तन-मन-धन से आश्रम की सेवा करते थे । शिविरों एवं उत्सवों के अवसर पर अथवा गुरुदेव की अहमदाबाद आश्रम में उपस्थिति के दौरान वे सपरिवार नियमित आश्रम आते थे तथा सत्संग-श्रवण के लिये जमीन पर आम लोगों के साथ ही बैठ जाते थे । उनमें यह अहंकार लेशमात्र भी नहीं था कि मैं इतने महान संत का बड़ा भाई हूँ । अलबत्ता, अपने अनुज की विश्वव्यापी महानता पर उन्हें नाज अवश्य था तथा गुरुदेव से वे बहुत प्रेम रखते थे ।

श्री जेठानंदजी ने कभी भी आश्रम की मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया । यदि गुरुदेव से भी उन्हें मिलना होता तो आश्रम के साधकों की सम्मति पाकर ही वे पूज्यश्री के पास जाते थे । कभी-कभी तो घंटों भर के इन्तजार बाद भी जब बापू से उनकी मुलाकात नहीं हो पाती तो पुनः दूसरे-चौथे दिन पूज्यश्री से मिलने का अवसर तलाशते, दर्शन-सत्संग पाते ।

जेठानन्दजी मातृभक्त थे । माताजी की आज्ञा को शिरोधार्य कर दृढ़ता से उसका पालन करना उनके अंतिम दिनों में भी देखा गया । सत्संग व संतों के प्रति गहरा आदरभाव लिये हुए व्यस्ततम व्यावसायिक क्षणों से भी समय निकाल कर वे पूरा-पूरा दिन आश्रम में गुजारते थे ।

'बापू मेरे छोटे भैया हैं' यह स्नेह उन्होंने अन्त तक विस्मृत नहीं किया था । दुकान एवं घर पर आदर से संत-भगवान को पूजे बिना नहीं रह पाते थे । उनकी मान्यता थी कि यदि मैं बापू से गुरुदीक्षा लूँगा तो अपना भैया खोऊँगा लेकिन न भैया खोया, न गुरु का स्नेह । भैया का स्नेह व गुरुप्रेम उनके चित्त में गहरा भरा था ।

आमसभा में जब वे व्यासपीठ पर विराजे बापू के निकट पहुँचते तो प्रसन्नता की मूर्ति पू. बापू विनोद में लोगों से कहते : "देखो ! आपके गुरुभाई जेठानन्द आये हैं ।"

संत के प्रति श्रद्धा व भैया के स्नेहमिश्रित

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91

गुजरात में वलसाड़ जिले के धरमपुर में आदिवासी जनता के लिए पूज्यश्री की स्नेह–सरिता बह चली ... हरि कीर्तन का मधुर रस, ज्ञानप्रसाद, प्रेमप्रसाद ...

पंचेड़ आश्रम, रतलाम में पूज्यश्री के चरणों में आशीर्वादाभिलाषी सश्रद्ध नमनवत् उप मुख्यमंत्री (म.प्र.) श्री सुभाषजी यादव

पूज्य बापू के स्नेही संत श्री लालजी महाराज

धरमपुर में समाज के पिछड़े हुए आदिवासियों पर पूज्यश्री की करुणा–कृपा... अन्न–वस्त्र एवं जीवनावश्यक चीज–वस्तुओं की सहाय ... भंडारा आदि के दृश्य... पचास हजार से अधिक लोग इस सेवायज्ञ से लाभान्वित हुए।

अहमदाबाद आश्रम द्वारा विगत दिनों प्रकाशा (महा.) में भंडारा कार्यक्रम बड़े शान–शौकत से सम्पन्न हुआ।

आश्रम के सेवाभावी साधक चिकित्सकों द्वारा निर्धन क्षेत्रों में निःशुल्क स्वास्थ्य–परीक्षण एवं औषध वितरण।

पूज्य गुरुदेव के आत्म–साक्षात्कार दिन पर मेहसाना (गुज.) से अहमदाबाद आश्रम तक पदयात्रा करते हुए हरिभक्तों ने मार्ग में आये गाँवों को भी हरिरस की प्यालियाँ पिलाई।